Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

लोही खरड्यो जो पितंबर,
लोही सूं केम धोवायो।
तिम हिंसा में धर्म कीयां थी,
जीव उजलो किम थायो।।

रक्त से सना हुआ कपड़ा रक्त से कैसे धुल पाएगा? हिंसा में धर्म मानकर जीव उजला कैसे होगा?

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 35 • 01 जून - 07 जून 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 30-05-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

आँखें बंद होते ही यहीं छूट जाएगी संपत्ति, मौत से बचाने का सामर्थ्य किसी में नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

जब मौत से कोई मित्रता का अनुबंध नहीं, तो फिर धर्म को कल पर क्यों टालना? : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

ज्ञानी और अनुभवी बड़ों के पास बैठने मात्र से रुक जाते हैं अशुभ योग : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में एकादशमाधिशास्ता का बोध;—पर्युपासना से आती है बात करने और प्रश्नों के उत्तर देने की अनूठी कला

लाडनूं।
26 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'पाप श्रमण कौन' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने श्रमण धर्म की महत्ता बताते हुए साधक जीवन में आने वाले प्रमाद के प्रति सचेत किया और फरमाया कि दीक्षा के बाद भी यदि चर्या में अजागरूकता है, तो साधुत्व अपनी गरिमा खो देता है।

बड़ों की पर्युपासना और संवाद की कला : आचार्य प्रवर ने ज्ञानियों की संगति और सेवा के व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. अशुभ योगों से बचाव : श्रमण धर्म को गहराई से समझने के लिए बहुश्रुत (ज्ञानियों) की पर्युपासना अनिवार्य है। यदि बड़ों के पास बैठकर सीधा संवाद न भी हो, तब भी उनके सानिध्य मात्र से जीवन में प्रमाद और अशुभ योगों से स्वतः बचाव हो जाता है।

२. व्यवहार कुशलता की सीख : अनुभवी और ज्ञानी पुरुषों के पास बैठने से मनुष्य जीवन में व्यवहार करने, मर्यादित बात करने और किसी भी प्रश्न का सटीक उत्तर देने की अद्भुत कला सीख सकता है। इसी मार्गदर्शन से मन में विरक्ति जागती है और जीव साधुत्व की ओर बढ़ता है।

> आहार करके सुख से सो जाना और गुरु की निंदा करना 'पाप श्रमण' का लक्षण
>
> -आचार्यश्री महाश्रमण

'पाप श्रमण' के लक्षण और आत्म-समीक्षा का आह्वान : शांतिदूत ने आगम गाथाओं के आलोक में प्रमादी साधु की वृत्तियों पर तीखा प्रहार किया और सजग रहने के सूत्र दिए।

१. सुविधाशीलता का मनोभाव : दीक्षा (प्रव्रज्या) ग्रहण करने के पश्चात् भी श्रमण-श्रमण में बड़ा अंतर हो सकता है। कोई श्रेष्ठ साधक होता है, तो कोई प्रमादी। जो साधु साधना के वास्तविक पुरुषार्थ और पराक्रम से जी चुराता है, वह 'पाप श्रमण' की श्रेणी में आता है।

२. अजागरूक चर्या : आहार-पानी करके सुख से सो जाना, स्वाध्याय-जप न करना, बार-बार नींद लेना, और जिन आचार्यों-उपाध्यायों से ज्ञान सीखा है, पीठ पीछे उन्हीं की निंदा करना व उनकी सम्यक् चिंता न करना ही पाप श्रमण के मुख्य लक्षण हैं।

३. साधकों को कड़ा निर्देश : चतुर्विध धर्मसंघ की चारित्रात्माओं को स्वयं के भीतर झांककर यह चिंतन करना चाहिए कि यदि ऐसे प्रमादी लक्षण स्वयं में दिखें, तो उन्हें तुरंत दूर कर श्रुत सामायिक और पराक्रम की ओर कदम बढ़ाना चाहिए।

(शेष पेज 9 पर)

बड़ों को वंदन करने से होता है नीच गोत्र का क्षय और उच्च गोत्र का बंध : आचार्यश्री महाश्रमण

'पूजा सत्कार की चाह नहीं' विषय पर युगप्रधान की अमृत देशना;—सच्चा भिक्षु लोकैषणा से ऊपर उठकर केवल आत्मा की गवेषणा करता है

लाडनूं।
25 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'पूजा सत्कार की चाह नहीं' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से पावन प्रतिबोध प्रदान किया।

आचार्यश्री ने भिक्षु जीवन की कसौटियों को स्पष्ट करते हुए फरमाया कि एक सच्चे साधक को लोकैषणा, सम्मान और प्रशंसा की आकांक्षा से सर्वथा मुक्त होकर केवल आत्मा की गवेषणा में लीन रहना चाहिए।

> प्रशंसा की भूख से दूर रहें साधक, गुरुकुलवास में मर्यादा और प्रोटोकॉल का रखें पूरा ध्यान
>
> -आचार्यश्री महाश्रमण

लोकैषणा का त्याग और भिक्षु का मूल स्वरूप : आचार्य प्रवर ने आगम गाथाओं के आलोक में साधु चर्या के नियमों को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए:

१. सत्कार की चाह से मुक्ति : साधु वही है जो संसार में किसी भी प्रकार के आदर, सम्मान या पूजा की इच्छा नहीं रखता। साधु की यह मांग या आकांक्षा कभी नहीं होनी चाहिए कि लोग उसे वंदन करें या उसकी प्रशंसा के गीत गाएं।

२. आत्म गवेषी जीवन : भिक्षु स्वभाव से संयत, सुव्रती और तपस्वी होता है। उसका एकमात्र लक्ष्य ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साधना करते हुए आत्म-कल्याण करना है। भिक्षा चर्या के दौरान विधि के अनुसार उसे जो कुछ भी सहज रूप से प्राप्त हो, उसे समभाव से ग्रहण करना ही साधुत्व है।

(शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 जून - 07 जून 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

जिनेश्वर देव की वाणी पर पूर्ण आस्था और निःशंकता ही सम्यक्त्व का असली पिल्लर : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं में 'धर्म ही त्राण-शरण' विषय पर युगप्रधान की अमृत देशना;—वर्तमान शरीर की मृत्यु अटल है, पर पापों से रक्षा करता है संवर-निर्जरा धर्म

लाडनूं।
24 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'धर्म ही त्राण-शरण' विषय पर आगम के आलोक में गंभीर दार्शनिक अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि यद्यपि तीर्थंकर भी वर्तमान शरीर की मृत्यु को नहीं टाल सकते, परंतु निश्चय की भूमिका में केवल संवर और निर्जरा धर्म ही जीव को पाप कर्मों के बंधन से बचाने वाला एकमात्र सच्चा त्राण और शरण है।

पाप से रक्षा : संवर और निर्जरा का सामर्थ्य : आचार्य प्रवर ने कर्म सिद्धांत की सूक्ष्मताओं को समझाते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए:

१. मृत्यु अटल, धर्म असली रक्षक : इस मनुष्य जीवन के बाद भले ही किसी को मोक्ष मिल जाए, लेकिन वर्तमान शरीर की मृत्यु निश्चित है। उस लौकिक मृत्यु से धर्म या तीर्थंकर भी नहीं बचा सकते। धर्म का असली सामर्थ्य आत्मा को पाप से बचाने में है।

२. संवर से आश्रव का अंत : जैसे ही आत्मा संवर की शरण में आती है, वैसे ही आश्रव (कर्मों का आना) रुक जाता है। फिर आश्रव में यह ताकत नहीं रहती कि वह नए कर्मों का बंधन करा सके।

३. निर्जरा से पापों का क्षय : निर्जरा धर्म की शरण में आने से आत्मा में पूर्व संचित पुराने पाप कर्मों का क्षय (निर्जरण) होने लगता है। जहाँ मिथ्यात्वी जीव के संवर नहीं होता, वहीं वह भी निर्जरा धर्म की शरण लेकर इसका पूरा लाभ उठा सकता है।

सम्यक्त्व के पिल्लर और कषाय मंदता की साधना : शांतिदूत ने साधु जीवन के सुरक्षा कवच और सम्यक्त्व को पुष्ट करने के व्यावहारिक सूत्र दिए:

१. सम्यक्त्व का अकाट्य स्तंभ: व्यवहार में देव, गुरु, धर्म पर अडिग श्रद्धा और नव तत्वों को जानना ही सम्यक्त्व है। जिनेश्वर भगवान द्वारा प्ररूपित सत्य जिनवाणी पर पूर्ण आस्था होना और पूरी तरह निःशंक रहना ही सम्यक्त्व का सबसे मजबूत पिल्लर है।

२. क्षायिक सम्यक्त्व का उदय :

> क्षायिक सम्यक्त्व आ जाए तो जीवन में फिर कभी नहीं आ सकता मिथ्यात्व का अंधेरा
> -आचार्यश्री महाश्रमण

साधु के व्रत संवर और सम्यक्त्व संवर जीवन का बहुत बड़ा सुरक्षा कवच हैं। यदि साधना के बल पर क्षयोपशामिक संवर से क्षायिक सम्यक्त्व संवर प्रकट हो जाए, तो आत्मा में पुनः कभी भी मिथ्यात्व का प्रवेश नहीं हो सकता।

३. विकारों पर नियंत्रण : चारित्र की निर्मलता के लिए क्रोध, मान, माया और लोभ रूपी कषायों को निरंतर पतला (प्रतनु) करने की साधना चलनी चाहिए। तत्व बोध में किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह या दुराग्रह नहीं होना चाहिए। जो बातें अहेतुगम्य (तर्क से परे) हैं, उन पर व्यर्थ तर्क-वितर्क करने के बजाय पूर्वजन्म, पुनर्जन्म और पुण्य-पाप की अवधारणा पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए।

साध्वी द्वय की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण : अर्ध शताब्दी का मंगल आशीषः मंगल प्रवचन के विशेष प्रसंग में आज लाडनूं की साध्वी कनक श्री जी ने सुधर्मा सभा में अपनी सुंदर भावाभिव्यक्ति दी। आज का दिन शासन के लिए अत्यंत गौरवमयी रहा जब साध्वी दिव्य प्रभा जी एवं साध्वी संघ प्रभा जी के दीक्षा पर्याय के गौरवशाली पचास वर्ष (50 वर्ष) पूर्ण हुए। इस ऐतिहासिक अर्ध शताब्दी के अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने दोनों साध्वियों की सम्यक्त्व साधना की सराहना करते हुए उन्हें निरंतर आत्म-कल्याण का पावन मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने भी दोनों साध्वियों के पांच दशकों के संयम काल की अनुमोदना करते हुए अपना प्रेरक उद्बोधन दिया। तत्पश्चात साध्वी दिव्य प्रभा जी व साध्वी संघ प्रभा जी ने गुरु चरणों में कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियां प्रस्तुत कीं।

आँखें बंद होते ही यहीं छूट जाएगी संपत्ति, मौत से बचाने का सामर्थ्य किसी में नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

वैभव या संसार, परलोक की यात्रा में जीव को कोई त्राण नहीं दे सकता

लाडनूं।
23 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'वह त्राण नहीं दे सकता' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से गंभीर अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने संसार के भौतिक वैभव की निसारता और मृत्यु की अपरिहार्यता को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया कि इस चराचर जगत में पापकर्मों के बंधन से बचाने में केवल वीतराग धर्म ही एकमात्र सच्चा त्राण (रक्षक) और शरण बन सकता है।

वैभव की सीमा और मृत्यु का शाश्वत नियम : आचार्य प्रवर ने आगम वाङ्मय के आलोक में राजा और संपूर्ण जगत के धन का उदाहरण देते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. अपर्याप्त जगत और धन : यदि किसी राजा को पूरे जगत का राज्य और सारा धन भी दे दिया जाए, तो भी उसकी तृष्णा के लिए वह अपर्याप्त रहेगा। सबसे बड़ा कटु सत्य यह है कि परलोक की यात्रा में यह धन और संसार मनुष्य को कोई त्राण (रक्षा) नहीं दे सकता।

२. आँखें बंद होने का अवसान : जब जीवन का अवसान होता है और मनुष्य की आँखें हमेशा के लिए बंद हो जाती हैं, तो उसकी जीवन भर की संचित धन-संपत्ति यहीं पीछे छूट जाती है।

३. तीर्थंकर का दृष्टांत : भगवान महावीर स्वयं तीर्थंकर थे, परंतु जब उनका आयुष्य पूर्ण हुआ तो इतनी विशाल शिष्य संपदा के होते हुए भी उन्हें काल के हाथों जाने से कोई रोक नहीं सका। जब तीर्थंकर भी शरीर छोड़ने को विवश हैं, तो सामान्य मनुष्य की क्या बिसात? चिकित्सा केवल उपचार का प्रयास कर सकती है, मृत्यु से बचाने की कोई अंतिम

गारंटी नहीं दे सकती। संघ या राजा व्यवहार की भूमिका पर एक सीमा तक रक्षक हैं, पर निश्चय में काल से बचाने का सामर्थ्य किसी में नहीं है।

कषाय मुक्ति ही वास्तविक धर्म और मोक्ष का मार्ग : शांतिदूत ने कर्म बंधन से मुक्ति और जैन दर्शन के उदार, व्यापक सिद्धांतों पर विशेष प्रकाश डालाः

१. धर्म ही एकमात्र त्राण : यदि मनुष्य अहिंसा, संयम और तप रूपी वीतराग धर्म की आराधना करता है, तो वह पापकर्मों के बंधन से बच सकता है। यही साधना उसे भविष्य के दुखों से बचाती है।

२. वेश और संप्रदाय से ऊपर मोक्ष : परम पूज्य आचार्य भिक्षु के ऐतिहासिक सिद्धांत को रेखांकित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि मिथ्यात्वी यदि धर्म की करणी करता है तो वह भी देश आराधक है। जैन दर्शन का यह परम अकाट्य सिद्धांत है कि मोक्ष की प्राप्ति किसी भी वेश, लिंग, श्वेतांबर अथवा दिगंबर संप्रदाय के बंधन में नहीं बंधी है। जो भी आत्मा पूरी तरह कषाय मुक्त (क्रोध, मान, माया, लोभ से रहित) हो जाती है, वही वास्तविक धर्म को पाती है और मोक्ष की अधिकारी बनती है।

> जब तीर्थंकर महावीर को भी काल से कोई रोक न सका, तो सामान्य मनुष्य की क्या बिसात
> -आचार्यश्री महाश्रमण

(शेष पेज 9 पर)

तेरापंथ धर्मसंघ की नवम साध्वीप्रमुखा

समर्पण और साधना के 4 वर्ष

लाडनूं।

तेरापंथ के अमर इतिहास से जुड़ा दिन वैशाख शुक्ला चतुर्दशी। इसी दिन आचार्यप्रवर ने संन्यास ग्रहण किया और ठीक चार वर्ष पूर्व इसी दिन तेरापंथ की नवमी साध्वीप्रमुखा के रूप में साध्वी विश्रुत विभाजी को प्रतिष्ठित किया। विगत चार वर्षों में पहली बार विराट साध्वी समूह के समक्ष यह अवसर आया है। समस्त साध्वी समाज में अपूर्व उत्साह का वातावरण था। प्रातः चार बजे से पूर्व ही वर्धापना की स्वर लहरियां प्रारम्भ हो गई।

लगभग द्विशताधिक साध्वियों ने प्रज्ञा भवन के ऊपर-नीचे से पंक्तिबद्ध हो कर अभ्यर्थना का नया नजारा प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद की भावभीनी अनेक स्वर लहरियों से वातावरण सुरम्य बन गया। सुधर्मा सभा में सूर्योदय के साथ ने विशाल साध्वी समाज के साथ आचार्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर के आशीर्वाद के साथ ही संतों ने वर्धापना गीत का संगान किया।

प्रमुखाश्री के गौरवपूर्ण जीवन को सुन्दर गीत के द्वारा प्रस्तुत किया। समणीजी की भी सामूहिक प्रस्तुति हुई। मुख्यमुनि प्रवर ने फरमाया कि नवम साध्वीप्रमुखा है, जैसे १ का अंक अखंड होता है, वैसे ही आप गुरुराज की अखंड आराधिका है, आपकी संयम साधना भी अखंड है। आप अखंड आत्मोपासिका है। आत्मदर्शन व गुरुदर्शन की अभीप्सा से निरन्तर अभिस्नात रहती हो और आप अखंड धर्मसंघ की प्रभावना में अखंड रूप से लगी हुई है।

साध्वीवर्याजी ने मंगल भाव प्रकट करते हुए फरमाया कि यह समर्पण की यात्रा का अभिनन्दन है।साध्वीप्रमुखाश्रीजी की प्रगति का मूलमंत्र है- आपका अनुत्तर संयम और अनुत्तर संकल्प शक्ति। आपकी योग साधना के रूप को उजागर करते हुए जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाए और निरामय जीवन की मंगलकामना करते हुए साध्वी समाज को दीर्घकाल तक आपकी शासना प्राप्त हो, यही शुभभाव अभिव्यक्त किए।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने चार वर्ष की इस यात्रा के अनेक अनुभव साझा करते हुए फरमाया कि गुरुदेव तुलसी ने संयम रत्न प्रदान किया। आ. महाप्रज्ञजी ने जीवन के विकास के सूत्र बताएं और साधना के गुर सिखाएं। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी का विश्वास, आश्वासन मुझे प्राप्त है। आपकी सुखद सन्निधि में मैं निश्चिंत हूँ। मैं आपकी सन्निधि में आत्मदर्शन चारित्र की निर्मल साधना करती हुई आचार्यप्रवर के इंगित की आराधना करती रहूं। स्वयं को साध्वी समाज के विकास में नियोजित कर सकूं।

सम्पूर्ण साध्वी समाज के अपूर्व उत्साह और अनहद श्रद्धा को देखते हुए परमपूज्य गुरुदेव को रात्रिकालीन मनोनयन कार्यक्रम का अनुरोध किया। अनुमति प्राप्त कर रात्रिकालीन कार्यक्रम तीन दिन तक चला।

चतुर्दशी की पूर्वसंध्या में ही कार्यक्रम का शुभारंभ हो गया। 29-30-1 अप्रैल तक वक्ताओं, गायकों की लम्बी पंक्ति थी। इस महनीय कार्यक्रम में प्रमुखाश्री की वंदना हेतु वक्ताओं और गायकों ने विविध रूप में अपनी प्रस्तुतियां दी। समूह गीत विभिन्न विभागों से संबद्ध थे। अमृतायन साध्वीवृंद, समाधिमरण की साध्वियों का संगान, गुजरात, मेवाड़ी साध्वियों की टोली, लाडनूं के गौरव की वर्धापना के लिए लाडनूं साध्वी समाज, उड़ीसा की साध्वियों, परिचारक वर्ग, समणीवृंद आदि- विविधता वैचित्र्यपूर्ण स्वर लहरियां पूरे परिषद को गुंजायमान कर रही थी। और अनेक एकाकी गायन भी हुए। वक्तव्य की लंबी कतार साध्वी के जीवन के विविध पहलुओं को उजागर कर रही थी। ऐसा अनुभव हो रहा था कि प्रत्येक साध्वी के मन-मस्तिष्क साध्वी प्रमुखा की विशिष्ट छवि अंकित है।

छोटी-बड़ी साध्वियों की टोली ने रोचक व मनमोहक प्रस्तुतियों से साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन को सतरंगी रूप में प्रस्तुत किया। संवाद के क्रम में अनेक वर्ग जुड़े - बीदासर दीक्षित साध्वीगण, अहमदाबाद- लाडनूं (समुच्चय वर्ग) प्रस्तुति, पार्श्वप्रभा आदि साध्वियों का AI का मनोरंजन कार्यक्रम, मध्यस्थप्रभा आदि साध्वियों की प्रेरणा रस की शानदार प्रस्तुति।

महाराष्ट्र की साध्वियों ने न्यूमरोलॉजी व ज्योतिष के आधार पर आपका गुणानुवाद किया। इसके साथ-साथ अखिल भारतीय महिला मंडल की आकर्षक प्रस्तुति हुई। उन्होंने स्क्रीन पर प्रमुखाश्री जी के गरिमापूर्ण जीवन को बड़े ही सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया। साध्वीप्रमुखाओं की स्वर्ग में होने वाली मीटिंग भावविभोर करने वाली थी। बालोतरा से पधारे युवती मंडल की बहनों ने कव्वाली के माध्यम से साध्वी प्रमुखाश्रीजी के जीवन की सुंदरतम प्रस्तुति दी।

अभिव्यक्ति...

महिला मंडल ने भी अपने भाग्य की सराहना की और एक साध्वीप्रमुखाश्रीजी पर आधारित गीत भी लॉन्च किया। मोदी परिवार में भी अपने कुलगौरव को के लिए अपूर्व उत्साह था। विविध विधाओं में पूरे मोदी परिवार ने उनके बचपन से लेकर तक की जीवनयात्रा को उजागर किया। त्रिदिवसीय कार्यक्रम का विशेष आकर्षण था- विशाल साध्वी समाज की गरिमामय उपस्थिति और वक्ताओं व की सारगर्भित प्रस्तुति। पुरानी और युगीन साध्वियों की रोचक प्रस्तुति और होने वाली 'ओम अर्हम्' की ध्वनि श्रोताओं के उत्साह को मुखर कर रही थी।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखाजी के प्रेरणा स्वर –

'यह अभिनन्दन, वर्धापना गुरुदृष्टि का वर्धापना है। तेरापंथ धर्मसंघ में गुरुदृष्टि जिस पर पड़ती है, समूचा संघ उसे अपने सर आंखों पर बिठाता है। पूज्य प्रवर ने जो दायित्व मुझे दिया, उसे मैं पूरी वफादारी के साथ, जिम्मेदारी के साथ निभाते हुए आगे बढ़ती रहूं - यही मेरी भावना है। आचार्यप्रवर ने जब मुझे व्यवस्था दी तब मेरे चिन्तन में एक संकल्प पैदा हुआ कि मुझे साध्वी समाज को तेजस्वी बनाना है, यशस्वी बनाना है। प्रत्येक साध्वी 2 संकल्प करें –

1. मुझे प्रतनु कषायी बनना है।
2. निरतिचार आचार का पालन करना है।

हम गुरुदेव के सपने को साकार करने के लिए संकल्पबद्ध होवें। हम महाव्रतों, समिति, गुप्ति की आराधना में अहर्निश जागरूक रहे।' इस प्रकार प्रमुखाश्री के प्रेरणा स्वर सुनकर सम्पूर्ण साध्वी-समाज भावविभोर हो उठा। आपका गुणसुमनों से सज्जित जीवन सुनकर और विकासोन्मुख प्रेरणा पाकर साध्वी समाज नतमस्तक है। त्रिदिवसीय कार्यक्रम में अनेकानेक प्रस्तुतियां हुई, फिर भी पचास से अधिक प्रस्तुतिकर्ताओं ने अपना विसर्जन कर, अपनी मौन अभिव्यक्ति की। त्रिदिवसीय कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रबुद्धयशाजी एवं साध्वी तेजस्वी प्रभाजी ने किया।

आचार्यप्रवर ने आशीर्वाद के रूप में फरमाया कि हमारे धर्मसंघ में साध्वी समाज की सुन्दर व्यवस्था के आज के दिन मैंने शासनमाता के स्थान की पूर्ति करने के लिए साध्वी विश्रुत विभाजी की नियुक्ति की। सम्पूर्ण समाज, समणियों आदि में महत्त्वपूर्ण कार्य इनके होने से आचार्यों को कार्य करने में सुविधा हो जाती है।

साध्वीप्रमुखाजी दिमाग व समर्पण दोनों क्षेत्रों का सुयोग है। गुरु की उपज, दिमाग सूझबूझ सब महत्त्वपूर्ण है। आजकल CA, Dr, PhD करके पढ़ी-लिखी साध्वियां आती है, उन्हें संभालना, दिशा-निर्देश देना आदि काम में कहीं कोई कमी नहीं रखती हैं। मुझे तो पढ़ी-पढ़ाई, गढ़ी-गढ़ाई, जमी-जमाई साध्वीप्रमुखा मिली है। पहले समणी नियोजिका, फिर मुख्य नियोजिका और अब साध्वीप्रमुखा के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आगम काम से भी जुड़े हुए है, धर्मसंघ की खूब प्रभावना करते रहे। साधना अच्छी चले, स्वास्थ्य अनुकूल रहे। आशीर्वाद प्रदान कर...

आचार्य प्रवर ने ऊर्जाभरा आशीर्वाद प्रदान किया।

करुणा के स्रोत आचार्यश्री महाश्रमण

● मुनि मदन कुमार ●

परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी में उदारता, महानता और श्रेष्ठता का समवाय है। ये विरल आध्यात्मिक गुण भीतर से पैदा होते हैं। भीतर में क्षायोपशमिक भाव है और वह जब प्रकृष्ट बनता है तब मनुष्य ऐसे दैविक गुणों से ओत-प्रोत हो जाता है। आचार्य श्री की विचारधारा और आभामण्डल में बहुत पवित्रता है। इससे वे चुम्बकीय आकर्षण के व्यक्तित्व बन रहे हैं। हजारों-लाखों व्यक्तियों को बांधे रखना चामत्कारिक व्यक्तित्व का ही करिश्मा है। वे देहरी दीपक के समान सम्मानार्ह बन रहे हैं। इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि पंजाब केसरी राजा रणजीत सिंह परोपकारपरायण थे। अपराध करने वाले को भी पुरस्कार देकर महानता का दर्शन प्रस्तुत करते थे। आचार्य श्री महाश्रमणजी इस माहात्म्य शैली को विकसित कर रहे हैं। मृदु अनुशासन के द्वारा वे शिष्यों में भावात्मक परिवर्तन लाना चाहते हैं। यह अहिंसक शक्ति है और इसका स्थायी प्रभाव है। अपराध वृत्ति को बदलने का यह श्रेष्ठ मार्ग है। इस मार्ग पर चलने के लिये प्रचुर धैर्य और क्षमा की शक्ति चाहिये। यह गौरवशाली इतिहास रचने का सुन्दर प्रकल्प है। हिंसा पर अहिंसा की विजय महापुरुषों की अद्भुत सोच है। अहिंसा का दर्शन मानव मन में आश्चर्य पैदा करता है। अहिंसा का उपदेश और अहिंसा का जीवन दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। महाभारत का एक प्रसंग है। भीम ने दुर्योधन आदि सौ कौरवों को मार डाला। अन्त में दुर्योधन को मारा। मरणासन्न दुर्योधन ने अश्वत्थामा से कहा - तुम पाण्डवों को मार डालो तो मेरी मृत्यु सुखपूर्वक हो जाये। इधर युद्ध में अश्वत्थामा के पिता द्रोणाचार्य द्रौपदी के भाई धृष्टद्युम्न के हाथों वीर गति को प्राप्त हो गये।

इससे अश्वत्थामा प्रतिहिंसा से भर गये। वे रात्रि के समय पाण्डवों के शिविर में घुस गये। वहां द्रौपदी के पांच पुत्र सो रहे थे। क्रोधान्ध अश्वत्थामा ने द्रौपदी के पांचों पुत्रों को मार डाला। अपने पुत्रों को मृत देखकर द्रौपदी विलाप करने लगी। पांडवों के हृदय प्रतिशोध की ज्वाला में जलने लगे। अर्जुन ने अश्वत्थामा को पकड़ लिया। उसने द्रौपदी से कहा - 'तुम्हारा अपराध सामने खड़ा है। तुम जो बोलोगी, वही दण्ड इसे दिया जायेगा।' हालांकि द्रौपदी अपने पुत्रों के अवसान से दुःख में डूबी हुई थीं और क्रोध भी कम नहीं था। किन्तु अश्वत्थामा को देखकर उनके हृदय में मां की ममता उमड़ आयी। उनका क्रोध शान्त हो गया। वे बोलीं - 'आर्य! इन्हें छोड़ दीजिये। इनके प्राण लेने से मुझे मेरे पुत्र वापस नहीं मिल जायेंगे।' द्रौपदी के उत्तर से हैरान अर्जुन ने कहा - 'यह तुम्हारे पुत्रों का हत्यारा है। क्या इसे दण्ड देने से तुम्हें शान्ति नहीं मिलेगी?' तब द्रौपदी बोलीं - 'नहीं, आर्य! ये मेरे अपराधी अवश्य हैं, किन्तु किसी मां के बेटे भी हैं। जिस तरह मैं अपने पुत्रों की मृत्यु से शोक सागर में डूबी हूं, उसी प्रकार इनके मरने से गुरु-पत्नी को बहुत चोट पहुंचेगी। मैं मां हूं और इसलिये किसी दूसरी मां को दुःखी करना नहीं चाहती। मैं इन्हें क्षमा करती हूं और आप लोग भी ऐसा ही करें।' पाण्डवों ने अश्वत्थामा को छोड़ दिया। क्षमा पाकर उन्हें घोर पश्चाताप हुआ। वे सिर झुकाये वहां से चले गये। दंड, अपराधी में विपरीत सोच भरता है, जबकि क्षमा से उसे पछतावा होता है और वह सुधार की राह पर बढ़ता है। अपने स्वभाव में क्षमा को स्थान देना अहिंसक चेतना का महानतम निदर्शन है। यह अहिंसा कभी-कभी अलौकिक प्रेम पैदा करती है।

आचार्य श्री महाश्रमणजी का जीवन एक सशक्त प्रेरणा है और किसी ग्रंथ से कम नहीं है। उन्हें दो महान और प्रतापी आचार्यों से संबोध प्राप्त हुआ है तथा यह उनके जीवन का परम सौभाग्य है। आचार्य श्री तुलसी और महाप्रज्ञ का युग और जोड़ी में विलक्षणता के दर्शन होते थे। ऐसा युग और ऐसी जोड़ी न भूतो और न भविष्यति कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं लगेगी। व्यक्ति निर्माण और ग्रंथ निर्माण की कला उनमें बेजोड़ थी। सामान्य जन से लेकर राष्ट्राध्यक्ष तक उन्हें श्रद्धा से याद करते रहेंगे। वे अपने आत्म गौरव और आत्म कर्तृत्व से पुरस्कृत हैं। आचार्य महाश्रमणजी उनकी प्राणवान कृति हैं। इनमें सहज सौन्दर्य है। आत्मोपासना की विरल वृत्ति ने उन्हें सौन्दर्यमय बना दिया है। सत्य और शिव की साधना करने वाला सौन्दर्य का देवता बन जाता है। वे अनुभव के स्वर में कहते हैं—'सच्चाई महान धर्म है। झूठ न रहे तो दुनिया कितनी सुखी बन सकती है। सत्य बोलने में कठिनाई है तो व्यक्ति मौन भले रह जाये, किन्तु असत्य संभाषण से यथासंभव बचने का प्रयास करना चाहिये।'

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 जून - 07 जून 2026

टीपीएफ शाखा की वार्षिक साधारण सभा सफलतापूर्वक संपन्न

बेंगलुरु।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) बेंगलुरु वेस्ट शाखा की वार्षिक आम सभा, राजाजीनगर में सफलतापूर्वक आयोजित हुई, जिसमें 34 सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ फेमिना टीम द्वारा मंगलाचरण से हुआ, जिसने आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण किया। टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट शाखा के अध्यक्ष ललित बेगानी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए शाखा की वर्षभर की प्रगति, गतिविधियों एवं सदस्य सहभागिता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत, साउथजोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी एवं मंत्री भरत भंसाली, पूर्व अध्यक्ष हितेश गिरिया ने शाखा द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों एवं सदस्यों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की। शाखा मंत्री कौशल खटेड़ ने सचिवीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसे सदन द्वारा अनुमोदित किया गया। कोषाध्यक्ष आशुतोष नाहर ने वित्तीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसे AGM में सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई। विभिन्न प्रकल्पों की वार्षिक रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई — आध्यात्मिकता रिपोर्ट – विकास सेठिया, स्वास्थ्य रिपोर्ट – रचना बाबेल, बौद्धिक गतिविधि रिपोर्ट – सुमित धारेवा, नेटवर्किंग रिपोर्ट – श्रद्धा बैद, शिक्षा रिपोर्ट – निशा कटारिया, फ्यूचुरा गतिविधि रिपोर्ट – निर्मल चावत।

कार्यक्रम में संजय मालू, अशोक छाजेड, गीतेश पारख की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन सुमित धारेवा द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

वार्षिक आम सभा सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई तथा आगामी वर्ष के लिए नई ऊर्जा एवं योजनाओं के साथ शाखा की सक्रियता को और सशक्त बनाने का संकल्प लिया गया।

गुरु पुष्य नक्षत्र के दुर्लभ संयोग पर महा-अनुष्ठान, गुरु-कृपा को बताया जीवन का वरदान

केजीएफ।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन, KGF में गुरु पुष्य नक्षत्र के दुर्लभ योग पर विशेष अनुष्ठान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी संयमलताजी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से किया। इस अवसर पर उन्होंने गुरु पुष्य नक्षत्र का महत्व समझाते हुए कहा कि 'यह वर्ष का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त है।

ज्योतिष शास्त्र में इसे 'नक्षत्रों का राजा' कहा गया है। गुरुवार को पुष्य नक्षत्र का आना सोने पर सुहागा है'। उन्होंने आगे कहा, 'मान्यता है कि इस योग में किया गया दान, जप, तप, मंत्र-साधना और नया कार्य अक्षय फल देने वाला होता है। इसका पुण्य कभी क्षीण नहीं होता। आज के दिन खरीदी गई वस्तु स्थायित्व लाती है और शुरू किया गया शुभ कार्य बिना बाधा के पूर्ण होता है।

साध्वीश्री ने श्रावकों को प्रेरणा देते हुए कहा कि अनुष्ठान करते समय यह संकल्प करना चाहिए कि 'यह जप अनुष्ठान मेरे आध्यात्मिक जीवन को और अधिक पुष्ट करे।' उन्होंने कहा, 'कुंडली में यदि गुरु ग्रह बलवान है तो सब शुभ माना जाता है। गुरु की कृपा-दृष्टि और वरदान से जीवन सार्थक हो जाता है। इसलिए गुरु का हमारे जीवन में सर्वोपरि महत्व है।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने अनुष्ठान की विधि समझाते हुए दिशा, आसन, स्वर, मुद्रा और स्थिरता के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 'गुरु पुष्य योग में मंत्र शीघ्र सिद्ध होते हैं, बशर्ते नियम और शुद्धता का पालन हो।' तत्पश्चात सभी श्रावकों को शरीर का रक्षा कवच करवाकर एक-एक मंत्र का जप करवाया गया। साथ ही मंत्रों का अर्थ, उनसे होने वाले लाभ तथा शुद्ध उच्चारण की विधि से सभी को अवगत कराया। यह अनुष्ठान निर्विघ्न आनंदपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस दुर्लभ योग का लाभ लेकर सभी श्रद्धालुओं ने अपने भीतर नई ऊर्जा, शांति एवं आध्यात्मिक संचार का अनुभव किया। कार्यक्रम में महासभा के कार्यकारिणी सदस्य श्रीमान सा संजयजी बांठिया, बैंगलुरु से विजयनगर के निवर्तमान अध्यक्ष मंगलचन्द कोचर, नवनिर्वाचित अध्यक्ष भँवरलाल मांडोत, दिनेश हिंगड आदि ने अपने वक्तव्य दिया व अनुष्ठान में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम में बैंगलुरु, बसवनगुडी, जीवनहल्ली, बंगारपेट, चेन्नई आदि क्षेत्रों के श्रद्धालु की अच्छी उपस्थित रही।

'लाइफ सेट है या अपसेट' कार्यशाला का आयोजन

हाई टेक सिटी, हैदराबाद।

हैदराबाद की हाई टेक सिटी में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी ठाणा- 2 के सान्निध्य में लाइफ सेट है या अपसेट' विषयक रविवारीय प्रवचन का आयोजन - तेरापंथी सभा- सिंकदराबाद द्वारा किया गया। मुनि दीप कुमारजी ने कहा- आज दुनिया को स्मार्ट जनता नहीं पीसफूल जनता चाहिए। आज दुनिया को रिच माइन्ड जनता नही, प्योर हार्ट चाहिए इसलिए लाइफ को केवल सेट ही नहीं बल्कि परफेक्ट बनाइए । आज का इंसान अपसेट क्यों हैं? क्योंकि उसने जिन्दगी को बाहर से सजाया लेकिन अन्दर से नहीं। बॉडी फिट है लेकिन माइन्ड गर्म है। पर्स फूल है लेकिन दिल खाली है। अध्यात्म से ही व्यक्ति की लाइफ सेट बन सकती है और कहीं घूम लो और तो भले हिल स्टेशन जाओ या विदेश जो जिंदगी में शांति नहीं मिलेगी । अध्यात्म का मतलब भागना नहीं हैं, स्वयं को पहचानना है, मौन में उतरना है, खुद से जुड़ना है। जिस दिन इंसान खुद को समझ लेता उसी दिन से जीवन बदलना शुरू हो जाता है । मुनि श्री ने 'लाइव सेट' करने के सूत्रों की भी चर्चा की। इस अवसर पर मुनि काव्य कुमार जी ने कहा- चेहरे पर स्टाइल है,हाथ में महंगा मोबाइल है, सोशल मीडिया पोस्ट की फोटो पर बढ़िया स्माइल है लेकिन भीतर से व्यक्ति निराशा है हताश है टूटा हुआ है । लाइफ को केवल सेट ही नहीं करना है लाइफ को बेस्ट बनाना है। सरिता जैन ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी।

नमस्कार महामंत्र कार्यशाला का आयोजन

तिरुणावले।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सोमयशाजी ठाणा -3 के सानिध्य में तिरुणावले मे नमस्कार महामंत्र कार्यशाला का आयोजन हुआ।

साध्वीश्री जी ने सभी को संबोधित करते हुए कहा नमस्कार महामन्त्र जैन शासन की प्रतिष्ठा है इस मन्त्र में अपनी कुछ मौलिक विशेषताएं है।

आगम की भाषा में 14 पूर्वी का सार कहकर अभिनन्दित किया गया है विश्व की संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञानराशि जिनमें संग्रहीत है। इस प्रकार हमने जाना कि यह महामन्त्र हमारा परम उपकारी सिद्धि दाता है अन्य मंत्रों में जहां एक विशिष्ट शक्ति होती है वहा इस महामन्त्र में चारो विशिष्ट शक्तियां है।

देवाकर्षण शक्ति २-कर्म विकर्षण 2. लक्ष्मी आह्वान शक्ति -2 रोग निवारण शक्ति महामंत्र जिससे प्राप्त होता है विराट संकट निवारण - शक्ति, लक्ष्मी आहवान शक्ति देवाकार्षण तथा कर्म-निर्जरा की शक्ति समाहित है। साध्वी ऋषिप्रभाजी ने कहा नमस्कार महामंत्र बंद रास्ते को खोलने की चाबी है और मंत्र का जाप व्यक्ति की संसार से विमुख नहीं करके संसार के प्रति, संसार के कर्तव्यों के प्रति जागरूक करता है।

डॉ. साध्वी सरलयशाजी ने कहा नमस्कार महामंत्र के रंग, केंद्र, गुणों के साथ कैसे जप करना चाहिए विस्तार से समझाया। इस कार्यशाला में सभी समुदाय के भाई बहनो भाग लिया। बड़े उत्साह के साथ सवा लाख जप करने का संकल्प लिया।

ओटोमैटिक मशीनों सहित लैब के नवीनीकरण का लोकार्पण

सूरत।

विश्व की सबसे बड़ी परिषद् के आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के अन्तर्गत आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सालय (सेवार्थ) में यूरोपियन टेक्नोलॉजी की फुली ओटोमैटिक मशीनों सहित लैब के नवीनीकरण लोकार्पण जैन संस्कार विधि द्वारा किया गया। संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद श्यामसुखा, प्रकाश डाकलिया, गौतमचंद वेदमुथा, सुशील गुलगुलिया, मिश्रीमल नंगावत, बजरंग बैद, विनीत श्यामसुखा, अरविंद बाफना, अमित चोपड़ा, पंकज बुच्चा ने निर्दिष्ट सम्पूर्ण विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा सानंद संपन्न कराया। मशीनों व लैब का उद्घाटन महासभा ट्रस्टी संजय सुराणा व अभातेयुप के राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी के द्वारा किया गया। महासभा के उपाध्यक्ष प्रकाश डाकलिया व अखिल भारतीय महिला मंडल की उपाध्यक्ष मधु देरासरिया एवं साथ ही सभी सभा संस्था के पदाधिकारीगण की उपस्थिति रही। तेयुप सूरत अध्यक्ष नमन मेड़तवाल ने सभी को शुभकामनायें संप्रेषित की एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

महानता का आधार है विनम्रता

जयपुर।

अजमेर रोड स्थित टैगोर नगर के नवोदित अणुव्रत भवन में चल रही आध्यात्मिक प्रवचन माला के अंतर्गत शुक्रवार को 'धर्म का मूल है - विनय' विषय पर विशेष प्रवचन आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुनि तत्व रुचि जी 'तरुण' ने विनम्रता को जीवन की महानता और धर्म का आधार बताया। अपने प्रवचन में मुनि श्री जी ने कहा कि जैसे वृक्ष के तने, शाखाएं, पत्ते, फूल और फल का आधार उसकी जड़ होती है, उसी प्रकार धर्म और ध्यान का मूल आधार विनय है।

विनम्रता, विनय का व्यावहारिक स्वरूप है और व्यक्ति की महानता उसी से प्रकट होती है। उन्होंने कहा कि विनम्रता ऐसा गुण है जो अन्य सभी गुणों को विकसित और पुष्पित करता है। जीवन में विकास और सफलता का वरदान विनम्रता से प्राप्त होता है, जबकि अहंकार पतन और अभिशाप का कारण बनता है। इसलिए सफलता के लिए अभिमान छोड़कर विनम्रता को अपनाना आवश्यक है। इस अवसर पर मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि विनम्रता जीवन का वास्तविक श्रृंगार है। व्यक्ति लोकप्रियता और सम्मान विनम्रता से प्राप्त करता है, अहंकार से नहीं। उन्होंने कहा कि अभिमान देवताओं को भी दानव बना देता है, जबकि विनम्रता साधारण मनुष्य को भी देवतुल्य बना सकती है।

उन्होंने आगे कहा कि विनम्रता व्यक्ति को केवल सफलता ही नहीं, बल्कि विशिष्टता भी प्रदान करती है। विनम्र व्यक्ति ही अपनी कमियों और भूलों को पहचानकर उनका परिष्कार कर सकता है। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान वासुपूज्य प्रभु की स्तुति में भक्ति गीत के संगान से हुई। इस दौरान प्रेक्षाध्यान एवं जप अनुष्ठान के प्रयोग भी करवाए गए। अंत में मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग का दीक्षांत समारोह

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा आयोजित कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग सीनियर्स एवं जूनियर्स कार्यशाला का भव्य दीक्षांत समारोह तेरापंथ सभा भवन, राजाजीनगर में आभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी द्वारा किया गया तथा भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम ने विजय गीत का संगान प्रस्तुत किया।

तेयुप अध्यक्ष जितेश दक ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए मंगलकामनाएँ प्रेषित की। सप्त दिवसीय सीनियर्स एवं छह दिवसीय जूनियर्स कार्यशाला में प्रोविजनल राष्ट्रीय प्रशिक्षक आदित्य मांडोत, ज़ोनल ट्रेनर्स निहारिका सिंघी एवं आकाश शाह ने प्रतिभागियों को वक्तृत्व कला के विविध आयामों का प्रशिक्षण प्रदान किया। सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने विषयों पर प्रभावशाली वक्तव्य प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोताओं को प्रभावित किया।

प्रतिभागियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं निरंतर सुधार को देखते हुए विशेष प्रतिभागियों की घोषणा की गई। कीर्ति मेहता, वर्षा दक, रक्षिता मांडोत, गौरव धारीवाल एवं संस्कार जैन, बानी टेबा, पलक जैन, दिवम गन्ना, हीर डुंगरवाल एवं मन्नन पारलेछा सभी चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर आभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी, मुख्य अतिथि एवं राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, मुख्य प्रशिक्षक एवं राष्ट्रीय प्रशिक्षक सीपीएस अकादमी अरविंद मांडोत, आभातेयुप राष्ट्रीय सीपीएस प्रभारी दिनेश मरोठी, तेयुप शाखा प्रभारी अमित दक एवं प्रोविजनल राष्ट्रीय प्रशिक्षक आदित्य मांडोत ने प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार सतीश पोरवाड़ आदि की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री अनिमेष चौधरी ने व्यक्त किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **सूरत।** वाव निवासी सूरत प्रवासी प्रीति-भरतभाई मेहता के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, धर्मचंद सामसूखा, सुशील गुलगुलिया, मनीष कुमार मालु, अभय बोथरा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार सानंद सम्पन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सूरत।** चुरू निवासी सूरत प्रवासी स्व.विमल कुमार पारख के सुपुत्र अमित पारख का शुभ पाणिग्रहण संस्कार सरदारशहर निवासी बैंगलोर प्रवासी स्व. अभय कुमार नाहटा की सुपुत्री रेखा के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, प्रकाश डाकलिया, धर्मचंद सामसूखा, मनीष कुमार मालू, अरविंद बाफना ने संपन्न करवाया।

अणुव्रत ही ज्ञान का व्यावहारिक रूप

दिल्ली।

IIPA में 'भारतीय ज्ञान परंपरा और अणुव्रत' पर संगोष्ठीः मुनि उदित कुमार जी,पूर्व सचिव अतुल तिवारी और प्रो. गिरीश्वर मिश्र सहित कई दिग्गज रहे उपस्थित। भारतीय लोक प्रशासन संस्थान (IIPA) में आज 'Indian Knowledge System and Anuvrat' विषय पर एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी उपस्थित रहे, जिन्होंने अपने प्रेरणादायी विचारों से पूरी सभा को दिशा दी। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत समिति के द्वारा मंगल गीत के संगान से हुआ। अणुव्रत समिति दिल्ली अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने स्वागत वक्तव्य दिया। बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने अपने उद्बोधन में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और अणुव्रत के गहरे अंतर्संबंधों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा:'-भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ग्रंथों या दर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक व्यावहारिक कला है। जब हम इस महान ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे संकल्पों के माध्यम से उतारते हैं, तो वही 'अणुव्रत' का रूप ले लेता है। आज के पर्यावरण संकट और मानसिक तनाव का एकमात्र समाधान हमारे इसी आत्म-अनुशासन और संयम में छुपा है।' अन्य शीर्ष विचारकों ने भी विषय के व्यावहारिक आयामों पर संक्षेप में अपनी बात रखी। मुख्य अतिथि अतुल कुमार तिवारी, IAS (पूर्व सचिव, स्किल इंडिया)-, प्रो.गिरीश्वर मिश्र (पूर्व कुलपति, MGAHV), प्रो. सुधा सिंह (विभागाध्यक्ष हिंदी, DU), अमिताभ रंजन (रजिस्ट्रार IIPA) कार्यक्रम का सफल संयोजन अनिल धर मिश्रा द्वारा किया गया, जिन्होंने मुनिश्री के पावन विचारों और विद्वानों के इस मंथन को राष्ट्रीय नीतियों के निर्माण के लिए अत्यंत उपयोगी और ऊर्जावान बताया।

'संयम और संकल्प से होगा Future Bright'

भावी पीढ़ी का संस्कार निर्माण शिविर का हुआ आयोजन

केजीएफ।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी आदी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में आज प्रातः KGF तेरापंथ सभा भवन में भावी पीढ़ी का संस्कार निर्माण शिविर' का भव्य आयोजन हुआ। ज्ञानशाला के नन्हे ज्ञानार्थियों द्वारा -अर्हम अर्हम की वन्दना की मधुर गीतिका से शिविर का मंगल शुभारंभ हुआ।

साध्वी संयमलताजी का प्रेरक उद्बोधन में बच्चों को संबोधित करते हुए साध्वी ने कहा Future Bright करना है तो परिश्रम, संयम और संकल्प को जीवन का आधार बनाएं। नैतिकता, प्रमाणिकता और ईमानदारी का हाथ कभी न छोड़ें। राजनीति पर भी आध्यात्मिकता का प्रभाव होना चाहिए। माता-पिता यदि आध्यात्मिक जीवन जीते हैं तो बच्चे स्वयं संस्कारी बन जाते हैं। साध्वी मार्दवश्री जी ने भगवती सूत्र का उल्लेख करते हुए कहा की - 'बच्चों का संस्कार उसी दिन से शुरू हो जाता है जब वह माँ की कोख में आता है। बच्चों के साथ समय बिताने से बोंडिंग मजबूत होती है। पिता को सम्मान देने से मान-सम्मान बढ़ता है और माता को सम्मान देने से निर्णय शक्ति व चंद्र बलवान होता है।' उन्होंने Calmness, Breathing Focus और Skill Development पर भी प्रकाश डाला। साध्वी मनिषाजी ने BEST का सूत्र को उदाहरणों के साथ B-Breath, E-Eat, S-Sit, T-Talk का महत्व समझाया और कहा - विनम्रता ही जीवन की असली सफलता है। साध्वी रोनकप्रभाजी ने अभिभावकों से आह्वान किया कि वे बच्चों को डिजिटल युग में संस्कारों से जोड़कर रखें ताकि तकनीक के साथ-साथ नैतिक मूल्य भी मजबूत हों। मुख्य अतिथि इंटरनेशनल ट्रेनर अभिलाषा डांगी ने बताया कि जीवन को शुरू से अंत तक इस तरह प्लान करें कि अंतिम समय में कोई पछतावा न रहे। ध्यान और योग को दिनचर्या का हिस्सा बनाएं और Effective Communication पर जोर देते हुए बताया कि 'कैसे सुनें और कैसे बोलें' - ये दो कलाएं सीख लेने से हमारा जीवन न केवल सुंदर बल्कि अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है। सही समय पर सही शब्दों का चयन और दूसरों को धैर्य से सुनना, व्यक्तित्व विकास की कुंजी है। इस शिविर में बैंगलुरु के बसवनगुडी, KGF व अन्य समाज के बच्चो ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 जून - 07 जून 2026

संबोधि

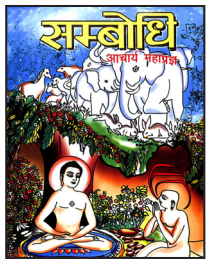

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मातृका ध्यान

आचार्य शुभचन्द्र ने लिखा है-'मातृका का ध्यान करने वाला पुरुष नाभिमंडल पर स्थित सोलह दल के कमल में प्रत्येक दल पर क्रम से फिरती हुई स्वरावली का अर्थात् 'अ आ इ ई उ ऊ ऋ लु लू ए ऐ ओ औ अं अः इन स्वरों का चिंतन करे। तत्पश्चात् ध्यानी अपने हृदय स्थान पर कर्णिका सहित चौबीस पत्रों के कमल का चिंतन करके उसकी कर्णिका तथा पत्रों में क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ मइन पच्चीस अक्षरों का ध्यान करे। तत्पश्चात् आठ पत्रों से विभूषित मुख-कमल के प्रत्येक पत्र पर भ्रमण करते हुए य र ल व श ष स ह-इन आठ वर्णों का ध्यान करे!'

मातृका ध्यान का फल

इस प्रकार प्रसिद्ध वर्ण-मातृका का निरन्तर ध्यान करता हुआ योगी भ्रम-रहित होकर, श्रुतज्ञान रूपी समुद्र के पार को (उत्तर-तट को) प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार ध्यान करने वाला मुनि श्रुतकेवली हो सकता है। ध्यान करने वाला पुरुष कमल के पत्र और कर्णिका के मध्य में अनादि संसिद्ध (पूर्वोक्त ४९) अक्षरों का ध्यान करता हुआ कितने ही काल में नष्टादि वस्तु संबंधी ज्ञान को प्राप्त करता है। इस वर्णमातृका के जाप से योगी क्षयरोग, अरुचि, अग्निमंदता कुष्ठ, उदररोग, कास तथा श्वास आदि रोगों को जीतता है और वचनसिद्धता तथा महान् पुरुषों से पूजा तथा परलोक में उत्तम पुरुषों से प्राप्त की हुई श्रेष्ठ गति को प्राप्त होता है।'

मंत्र

वर्ण, मातृका, बीजाक्षर और मंत्रों की पृथक् पृथक् रूप में जब हम चर्चा करते हैं तब मंत्र की परिभाषा में कुछ भिन्नता हो जाती है। यों तो सभी वर्ण बीजाक्षर मंत्र हैं, शक्ति सम्पन्न हैं और प्रयोक्ता को अपनी शक्ति का परिचय देते हैं, किन्तु जब मंत्र को पृथक् करते हैं उनकी परिभाषा इस रूप में उपलब्ध होती है-'दस से बीस वर्षों के समूह को मंत्र कहा जाता है।' 'इष्टदेव का अनुग्रहविशेष ही मंत्र कहलाता है। देवता के सूक्ष्म शरीर को ही मंत्र कहते हैं। सर जानुवुडरेफ ने शिव, शक्ति और आत्मा के ऐक्यरूप को मंत्र कहा है। **'चित्तं मंत्रं'**- शिवसूत्र विमर्शिनी में चित्त को मंत्र कहा है। तंत्र में शक्ति को मंत्र कहा गया है-

'मननात् सर्वभावनां, त्राणात् संसारसागरात्।
मन्त्ररूपाहि तच्छक्तिर्मननत्राणरूपिणी।।

समस्त भावों के मनन और समस्त जगत् के त्राणस्वरूप होने के कारण वह मंत्र रूप शक्ति ही है।'

मनन और त्राणधर्मात्मक जो वर्णसमुदाय होता है उसे मंत्र कहा गया है। डा. शिवशंकर अवस्थी ने मनन और त्राण की तांत्रिक परिभाषा करते हुए लिखा है-'परनाद या परस्फुरणा का परामर्श ही मनन है, मनन पर शक्ति के महान् वैभव की अनुभूति है- उसके परमैश्वर्य का उपयोग है। अपूर्णता अथवा संकोचमय भेदात्मक संसार के प्रशमन को रक्षा अथवा त्राण कहते हैं। इस प्रकार शक्ति के वैभव या विकासदशा में मननयुक्त तथा संकोच या सांसारिक अवस्था में त्राणमयी विश्वरूप विकल्प को कवलित कर लेने वाली अनुभूति ही मंत्र है।'

मंत्रों के स्वल्पाक्षरों की असीमित शक्ति का रहस्य अब स्पष्ट है। प्रत्येक शब्द अपनी ध्वनि से प्रकंपन पैदा करता है और उन प्रकंपनों से जगत् प्रभावित होता है। वह शक्ति निर्माणात्मक और विध्वंसात्मक दोनों रूपों में विद्यमान है। यह प्रयोक्ता पर निर्भर है कि वह कैसा प्रयोग करता है। विद्वेष, उच्चाटन, वशीकरण सम्मोहात्मक आदि सभी प्रकार की शक्तियां शब्दों में निहित है और यह भी स्पष्ट है कि जो शब्दशक्ति के द्वारा दूसरों का अहित तथा अनिष्ट करता है, अंततोगत्वा वह स्वयं के महापतन का पथ तैयार करता है। इसलिए प्रशस्त साधकों को इनसे बचने की सूचना सर्वप्रथम दी जाती है। मानसिक पवित्रता साधना की आधारभूमि है। इसके अभाव में जीवन की उलझनें न्यून नहीं होतीं और साधक के उत्पथ पर जाने की संभावना भी नकारी नहीं जाती।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

समता के तीन आयाम

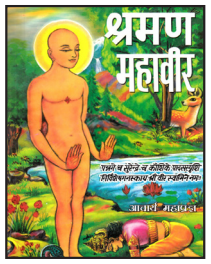

'कहां जा रहे हो?'

'भगवान महावीर की उपासना करने जा रहा हूं।'

'क्या मैं भी जा सकता हूं?'

'किसी के लिए प्रवेश निषिद्ध नहीं है।'

अर्जुन सुदर्शन के साथ भगवान के पास पहुंचा। आरक्षिकों ने श्रेणिक को सूचना दी कि पाप शांत हो गया है। राजपथ निर्विघ्न है। निरंकुश हाथी पर अंकुश का नियंत्रण है। अर्जुन सुदर्शन के साथ भगवान महावीर के पास चला गया है। राजकीय घोषणा के साथ राजपथ का आवागमन खुल गया।

भगवान के कण-कण में अहिंसा का प्रवाह था। मैत्री और प्रेम की अजस्र धाराएं बह रही थीं। उसमें स्नात व्यक्ति की क्रूरता धुल जाती थी। अर्जुन का मन मृदुता का स्रोत बन गया।

मनुष्य के अन्तःकरण में कृष्ण और शुक्ल-दोनों पक्ष होते हैं। जिनकी चेतना तामसिक होती है, वे प्रकाश पर तमस् का ढक्कन चढ़ा देते हैं। जिनकी चेतना आलोकित होती है, वे प्रकाश को उभार तमस् को विलीन कर देते हैं। भगवान ने अर्जुन के अन्तःकरण को आलोक से भर दिया। उसके मन में समता की दीपशिखा प्रज्वलित हो गई। वह मुनि बन गया।

कल का हत्यारा आज का मुनि-यह नाटकीय परिवर्तन जनता के गले कैसे उतर सकता है? हर आदमी उस सत्य को नहीं जानता कि मनुष्य के जीवन में बड़े परिवर्तन नाटकीय ढंग से ही होते हैं। असाधारण घटना साधरण ढंग से नहीं हो सकती। साधारण आदमी असाधारण घटना को एक क्षण में पकड़ भी नहीं पाता। अर्जुन से आतंकित जनता उसके मुनित्व को स्वीकार नहीं कर सकी।

अर्जुन ने भगवान के पास समता का मंत्र पढ़ा। उसकी समता प्रखर हो गई। मान-अपमान, लाभ-अलाभ, जीवन-मृत्यु और सुख-दुःख में तटस्थ रहना उसे प्राप्त हो गया।

कुछ दिनों बाद मुनि अर्जुन भिक्षा के लिए राजगृह में गया। घर-घर से आवाजें आने लगीं-इसने मेरे पिता को मारा है, भाई को मारा है, पुत्र को मारा है, माता को मारा है, पत्नी को मारा है, मित्र को मारा है। कहीं गालियां, कहीं व्यंग्य, कहीं तर्जना और कहीं प्रताड़ना। अर्जुन देख रहा है-यह कृत की प्रतिक्रिया है, अतीत के अनाचरण का प्रायश्चित्त है। उसे यदि रोटी मिलती है तो पानी नहीं मिलता और यदि पानी मिलता है तो रोटी नहीं मिलती। पर उसका मन न रोटी में उलझता है और न पानी में। उसका मन समता में उलझकर सदा के लिए सुलझ गया। उसके समत्व की निष्ठा ने जनता का आक्रोश सद्भावना में बदल दिया। अहिंसा ने हिंसा का विष धो डाला।

३. सहिष्णुता का आयाम

मेतार्य जन्मना चाण्डाल थे। वे भगवान महावीर के संघ में दीक्षित हुए। उनका मुनि-जीवन ज्ञान और समता की साधना से प्रदीप्त हो उठा। उनके अन्तर की ज्योति जगमगा उठी। वे संघ की सीमा से मुक्त हो गए। अब वे अकेले रहकर साधना करने लगे। एक बार वे राजगृह में आए। स्वर्णकार के घर भिक्षा लेने पहुंचे। स्वर्णकार उन्हें देख हर्ष-विभोर हो उठा। वह वंदना कर बोला- 'श्रमण! आप यहीं ठहरें। मैं दो क्षण में यह देखकर आ रहा हूं कि रसोई बनी है या नहीं?' स्वर्णकार भीतर घर में गया। मुनि वहीं खड़े रहे। स्वर्णकार की दुकान में क्रौंच पक्षी का युगल बैठा था।

स्वर्णकार के जाते ही वह आगे बढ़ा और दुकान में पड़े स्वर्णयवों को निगल गया।

स्वर्णकार मुनि को घर में ले जाने आया। उसने देखा, स्वर्णयव लुप्त हैं। वह स्तब्ध रह गया। उसके मन में आवेश उतर आया। उसने स्वर्णयवों के विषय में मुनि से पूछा। मुनि मौन रहे। स्वर्णकार का आवेश बढ गया। वह बोला- 'श्रमण ! मैं अभी आपके सामने स्वर्णयव यहां छोड़कर गया। कुछ ही क्षणों में मैं यहां लौट आया। इस बीच कोई दूसरा व्यक्ति यहां आया नहीं। मेरे स्वर्णयवों के लुप्त होने के उत्तरदायी आपके सिवाय दूसरा कौन हो सकता है?' मुनि अब भी मौन रहे।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

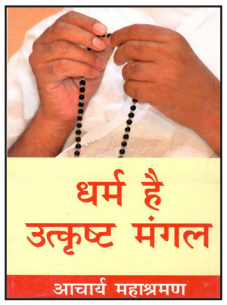

-आचार्यश्री महाश्रमण

कार्यकर्त्ता के मौलिक गुण

जो मनस्वी और कार्यार्थी व्यक्ति होता है उसको सब स्थितियां सहनी पड़ती हैं। कहीं गया, सोने के लिए अच्छा स्थान मिल गया, उसका उपयोग किया जा सकता है, कहीं सोने का अच्छा स्थान न मिला तो वहीं संतोष कर लिया। कहीं खाने के लिए अच्छा भोजन मिल गया तो भी संतोष, कहीं अच्छा भोजन न मिला तो भी संतोष। कहीं अच्छे कपड़े भेंट में आ गए, मालाएं पहना दी गई, शाल्यार्पण कर दिया गया तो भी ठीक है, कहीं पूरा सम्मान न मिला तो भी ठीक है। यानी ऐसी स्थितियों में अपने आपको सम रखने की जरूरत है। साधना करता हुआ जो व्यक्ति चलता है, वह काम में आगे बढ़ सकता है और मेरा तो ऐसा लगभग विश्वास है कि जो व्यक्ति सच्चे दिल से सेवा करता है, सच्चे दिल से काम करता है, कभी-न-कभी समाज अवश्य उसका मूल्यांकन करता है और मुझे वह पक्ति इस प्रसंग में भी याद आती है कि 'देर भले, अंधेर नहीं।'

कार्यकर्त्ता के मन में कुछ समता की साधना होनी चाहिए कि सब स्थितियों को झेलते हुए भी वह अपनी सेवाएं देता रहे। कार्यकर्त्ता का यह छठा मौलिक गुण है-परिश्रमशीलता।

कार्यकर्त्ता में एक मौलिक गुण होना चाहिए-विनम्रता का। कार्यकर्त्ता सबको साथ लेकर चले। विरोध में भी विवाद को न उठने दे। सामंजस्य की भावना हो। जब अमेरिका के लोगों ने अपने देश को आजाद कराने का फैसला लिया, तो मुक्ति सेना का किसी को मुखिया, सेनापति बनाना था, मीटिंग बुलाई गई, उसमें बड़े-बड़े व्यक्ति थे, विद्वान्, युद्ध कुशल। उनमें एक था जार्ज वाशिंगटन। वाशिंगटन की अपेक्षा और अन्य लोग काफी बड़े-बड़े थे पर सबने मिलकर जार्ज वाशिंगटन को मुक्ति सेना का मुखिया चुना। क्यों? बताया गया कि उसका मुख्य कारण यह था कि जार्ज वाशिंगटन एक शांत प्रकृति का आदमी था, निरभिमानी, विनम्र स्वभावी, संतुलित प्रकृति का आदमी था। उसको लेकर किसी के मन में कोई वैमनस्य का भाव नहीं था, सबके मन में उसके प्रति सद्भावना थी।

जब दूसरों के मन में ईष्या होती है, तो वहां मुखिया बनाने में कई कठिनाइयां होती हैं, पर जो अजातशत्रु व्यक्ति हो, उसको सब चाहते हों तो उसको मुखिया बनाने में, उसका चयन करने में कोई खास दिक्कत नहीं आती है। तो सबने मिलकर जार्ज वाशिंगटन को अपनी मुक्ति सेना का मुखिया बना लिया और अमेरिका के स्वतंत्र होने के बाद देश का प्रथम राष्ट्रपति भी जार्ज वाशिंगटन को चुना गया।

पदाधिकारी अपने आप में बड़ा कुशल है, काम करने में सक्षम है, पर सबको साथ लेकर चलने की क्षमता नहीं है तो भी वह व्यक्ति अपने आप में पूर्ण सफल नहीं हो सकता। तो एक अच्छे कार्यकर्त्ता में सबको साथ लेकर चलने की भी ताकत होनी चाहिए। जिसमें विनम्रता होती है, अनेकांत शैली होती है और सामंजस्य भावना होती है वह सफल होता है। अतः कार्यकर्त्ता का सातवां मौलिक गुण है– विनम्रता।

ये सात गुण जिस कार्यकर्त्ता में आ जाते हैं, वह एक सफल कार्यकर्त्ता बन सकता है। कार्यकर्त्ता में ऐसी मौलिक विशेषताएं होती हैं तो निःसंदेह हमारा समाज तेजस्वी, गौरवशाली एवं एक आदर्श समाज बन सकता है। तेरापन्थ का हर कार्यकर्ता श्रावक + कार्यकर्त्ता हो। उसमें श्रावकत्व भी बोलना चाहिए।

संगठन के सूत्र

विज्ञान की एक शाखा है वनस्पति विज्ञान। उसके अनुसार वनस्पतियों में इन्टर एक्शन (पारस्परिक प्रभाव) होता है। एक वनस्पति दूसरी वनस्पति को प्रभावित करती है। वनस्पति के इन्टर एक्शन की चार क्रियाएं संगठन की दृष्टि से मननीय हैं। वे इस प्रकार हैं-

सिम्बायोसिस् (सहजीवन) एक वनस्पति अपने शरीर से ऐसे पदार्थों को छोड़ती है जो दूसरी वनस्पति को पोषण प्रदान करते हैं। यह पारस्परिक सहयोग का संबंध है।

विकास का एक सूत्र दिया गया- स्ट्रगल इज लाइफ (संघर्ष जीवन है)। एक दृष्टि से यह सच भी लगता है। प्रसिद्ध जैन आचार्यश्री उमास्वाति ने हजारों वर्ष पहले जीवन-निर्वाह का सूत्र दिया- परस्परोपग्रहो जीवानाम्। पारस्परिक उपकार या सहयोग से प्राणियों का जीवन चलता है। जीवन के कुछ पहलुओं में एक व्यक्ति सहयोग देता और कुछ पहलुओं में वह सहयोग लेता है। शिष्य आचार्य की सेवा करता है, उनका विनय करता है। आचार्य शिष्य को ज्ञान देते हैं, उसका मार्ग दर्शन करते हैं, उसे वात्सल्य देते हैं। यह गुरु, शिष्य का पारस्परिक उपकार है। इसी प्रकार स्वामी-सेवक, पिता-पुत्र, माता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी, मित्र-मित्र आदि के यथोचित पारस्परिक सहयोग के संबंध होते हैं। समुचित पारस्परिक सहयोग से संगठन को वह प्राण-ऊर्जा मिलती है जो उसे दीर्घजीवी बनाने में कामयाब सिद्ध होती है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com
पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 जून - 07 जून 2026

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभाओं के समाचार

जसोल

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा जसोल के अध्यक्ष भूपतराज कोठारी की अध्यक्षता में पुराणा ओसवाल भवन, जसोल में साधारण सभा का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के साथ मीटिंग का सुभारम्भ हुआ। साधारण सभा में वार्षिक प्रतिवेदन व कोषाध्यक्ष बाबूलाल डोसी द्वारा वार्षिक आय -व्यय का ब्यूरा प्रस्तुत किया गया। जिसे सदन द्वारा ध्वनि मत से प्ररित किया गया। अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने अपने दो वर्ष कार्यकाल में किये गए सेवा कार्यों का विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इससे पूर्व मीटिंग का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण से हुआ। सभा गीत का संगान किया गया व साथ ही श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। कार्यक्रम में जोधपुर संभाग आंचलिक प्रभारी गौतमचंद सालेचा, डूंगरचन्द सालेचा सहित वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये। सदन की एक मत सहमति से चुनाव मनाव प्रणाली से सम्पन्न हुए। जिसमे जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, जसोल के वर्ष 2026 - 28 के लिए सर्व सम्मति से निर्विरोध गौतमचन्द ढ़ेलडिया को मनोनीत किया गया। खूब नव निर्वाचित अध्यक्ष गौतमचन्द ढ़ेलडिया ने पूरे सदन से विशेष उमंग के साथ कार्य करने का आह्वान किया।

नागपुर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा नागपुर का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि द्वारा अणुव्रत भवन में हुआ। संस्कारक आनंदमल सेठिया, जतन मालू एवं महेंद्र आंचलिया ने पूर्णमंत्रोच्चार द्वारा निर्देशित विधि से संपन्न करवाया। पूर्व अध्यक्ष विजय रांका ने नव मनोनीत अध्यक्ष संजय पुगलिया को विधिवत शपथ ग्रहण करवाई एवं आगमी कार्यकाल की बधाई प्रदान की।

तत्पश्चात अध्यक्ष संजय पुगलिया ने श्रावकनिष्ठा पत्र का वाचन कर वर्ष 2026– 2028 की कार्यकारिणी की विधिवत घोषणा की । उपाध्यक्ष प्रथम के लिए अमोलक सेठिया, उपाध्यक्ष द्वितीय प्रमोद गदेया, मंत्री राजेंद्र पटावरी ,कोषाध्यक्ष आदित्य कोठारी, सहमंत्री प्रथम प्रकाश डागा, सहमंत्री द्वितीय मुकेश बुच्चा, संगठन मंत्री महेंद्र आंचलिया के नामों की घोषणा की एवं अपने अपने दायित्वों की शपथ दिलाई। अध्यक्ष महोदय ने अपने स्वागत भाषण में परम पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए समाज के सभी धार्मिक बंधुओं से पूर्ण सहयोग की अपील की एवं निर्विरोध मनोनीत करने के लिए आभार व्यक्त किया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष नितेश छाजेड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फॉर्म से नवीन सेठिया ने किया।

चंडीगढ

मनोज जैन इससे पूर्व चार बार अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रह चुके हैं तथा वर्तमान में समिति के चेयरमैन के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इसके साथ ही वे पंजाब तेरापंथी सभा में भी वाईस प्रेसिडेंट के पद पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार में उनका विशेष योगदान माना जाता है। समाज में उनकी पहचान एक प्रबुद्ध समाजसेवी एवं सक्रिय संगठनकर्ता के रूप में है। अध्यक्ष बनने के बाद मनोज जैन ने समाज के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा, 'जैन समाज ने मुझ पर जो विश्वास जताया है, उस पर मैं पूरी तरह खरा उतरने का प्रयास करूंगा और समाज की बेहतरी, विकास एवं एकता के लिए यथासंभव कार्य करूंगा।' उन्होंने आगे कहा कि 'मुनि विनय कुमार जी की मुझ पर विशेष कृपा एवं मार्गदर्शन रहा है, जिसके लिए मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं। मनोज जैन की नियुक्ति को समाज एवं संगठन के लिए एक सकारात्मक, प्रेरणादायक एवं दूरदर्शी कदम माना जा रहा है।

राजाराजेश्वरी नगर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राजाराजेश्वरी नगर की अष्टम वार्षिक साधारण सभा 2026 का अध्यक्ष राकेश छाजेड़ की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन में किया गया। पूर्व अध्यक्ष मनोज डागा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। सहमंत्री राजेश भंसाली ने गत साधारण सभा के मिनट्स का वाचन किया। दो वर्ष के गति-प्रगति का वर्णन मंत्री गुलाब बाँठिया ने किया जिसे सदन ने सहर्ष पारित किया। कोषाध्यक्ष देवेन्द्र नाहटा ने व्यवस्थित रूप से दो वर्ष के आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया जिसे सदन ने ॐ अर्हम् की ध्वनि से पारित किया। तत्पश्चात अध्यक्ष सहित वर्तमान कार्यसमिति के सभी सदस्यों ने अपने पद का विसर्जन किया। चुनाव अधिकारी मनोज डागा एवं सह-अधिकारी सुशील भंसाली (छापर)ने मनोनयन की प्रक्रिया को शुरू करते हुए एक भी नामांकन पत्र प्राप्त न होने की स्थिति में वर्ष 2026-28 के अध्यक्ष पद हेतु सदन की सहमति से अध्यक्ष के रूप में कमलसिंह दुगड़ के नाम की घोषणा की। सदन में उपस्थित सभी सदस्यों ने ॐ अर्हम् की हर्षमिश्रित जोरदार ध्वनि के साथ सहमति पर मोहर लगाई। तब चुनाव अधिकारी के रूप में मनोज जी डागा ने कमलसिंह दुगड़ के नाम की घोषणा की। राकेश एवं उनकी पूरी टीम तथा उपस्थित सदस्यों ने नवमनोनीत अध्यक्ष महोदय का स्वागत किया। राकेश छाजेड़ ने नवनियुक्त अध्यक्ष को जैनपट्ट एवं माला पहनाकर अध्यक्ष पद पर स्थापित किया। नवमनोनीत अध्यक्ष को हार्दिक बधाई एवं सदैव साथ देने का विश्वास दिलाया एवं सक्षम हाथों में मंडल की बागडोर सौंपने पर आत्मतोष व्यक्त किया। ट्रस्ट, तेयुप, तेममं, समण संस्कृति संकाय, ज्ञानशाला परिवार, उपस्थित गणमान्य सदस्यों एवं सभी कार्यकारणी सदस्यों ने नवनियुक्त अध्यक्ष को बधाइयां दी। नवनियुक्त अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु इंगित की आराधना करते हुए सबको साथ में लेकर सदस्यों में आध्यात्मिकता का पोषण होता रहे ऐसी भावना से पूर्ण निष्ठा के साथ अपने दायित्व का निर्वहन करने का सम्यक् प्रयास करूंगा।

मदुरै

तेरापंथ भवन में आम सभा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। सभा अध्यक्ष गौतमचंद गोलेछा ने सभी का स्वागत करते हुए वर्ष 2025-26में मदुरै में मुनि हिमांशु कुमार जी ठाणा-2 के सफलतम चातुर्मास में सभी के सहयोग हेतु खूब-खूब साधुवाद ज्ञापित किया। सभा मंत्री अभिषेक कोठारी ने विगत दो वर्षों 2024-26 में हुए विभिन्न कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की तथा सभा, ट्रस्ट, महिला मंडल, युवक परिषद, कन्या मंडल एवं सभी सहयोगियों के प्रति तहदिल से आभार व्यक्त किया।

सभा के कोषाध्यक्ष धीरज पारख ने आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। अशोक जीरावला ने सभा के इनकम टैक्स रिटर्न फाइलिंग अकाउंट की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए जानकारी दी। साथ ही नातिले मुनि हिमांशु कुमार जी के चातुर्मास के दौरान युवक परिषद टीम द्वारा रास्ते की सेवा में दिए गए सराहनीय सहयोग एवं भोजनशाला प्रभारी अभिनंदन बागरेचा को विशेष रूप से खूब-खूब साधुवाद दिया। इसके पश्चात सभा अध्यक्ष गौतमचंद गोलेछा ने अपनी समस्त टीम का पद विसर्जन किया। तत्पश्चात चुनाव अधिकारी उपासक नैनमल कोठारी ने चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ की। सभा सदस्य पृथ्वीराज संकलेचा ने गौतमचंद गोलेछा के नाम का पुनः 2026-28 अध्यक्ष पद हेतु प्रस्ताव रखा, जिसका समर्थन अभिनंदन बागरेचा ने किया। उपस्थित सभी सदस्यों ने 'ॐ अर्हम' के जयघोष के साथ प्रस्ताव का स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन नितेश कोठारी ने किया।

पीलीबंगा

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, पीलीबंगा की आम सभा की बैठक नवनिर्वाचित अध्यक्ष हनुमान जैन ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के सहयोग से संगठन को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का विश्वास व्यक्त किया। घोषित कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष पद पर प्रकाश डाकलिया एवं श्री प्रदीप बोथरा को मनोनीत किया गया। मंत्री पद का दायित्व अशोक नौलखा को सौंपा गया, जबकि सहमंत्री के रूप में अरिहंत दफ्तरी और अमित छाजेड़ को नियुक्त किया गया। कोषाध्यक्ष पद पर हनुमान सुराणा एवं संगठन मंत्री के रूप में ओम प्रकाश पुगलिया को जिम्मेदारी दी गई।

चेन्नई

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा चेन्नई के अध्यक्ष अशोक खतंग की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन,साहूकारपेट में वार्षिक साधारण सभा का आयोजन हुआ।सामूहिक नमस्कार महामंत्र के साथ बैठक का शुभारम्भ हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तनसुख नाहर ने किया। अध्यक्षीय स्वागत भाषण में अशोक खतंग ने सभा की गतिविधियों का वार्षिक लेखा-जोखा प्रस्तुत किया तथा सम्पूर्ण समाज द्वारा प्राप्त स्नेह व सहयोग के प्रति कृतज्ञता के भाव अभिव्यक्त किये। चुनावी प्रक्रिया का शुभारंभ करते हुए चुनाव अधिकारी अशोक बोहरा व सह चुनाव अधिकारी दिनेश भंसाली ने बताया कि अध्यक्षीय पद हेतु दो प्रत्याशियों महेंद्र मांडोत व अनिल सेठिया के नामांकन पत्र प्राप्त हुए हैं।दोनों प्रत्याशियों की सदन के मध्य विचार अभिव्यक्ति के पश्चात मतदान प्रक्रिया सम्पन्न हुई।मतगणना के आधार पर अंततः चुनाव अधिकारी द्वय ने महेन्द्र मांडोत के वर्ष 2026-28 के लिए अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने की घोषणा के साथ उन्हें इस आशय का प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया। चेन्नई में तेरापंथ धर्मसंघ की सभी संस्थाओं व ट्रस्ट बोर्ड आदि के प्रतिनिधियों, अध्यक्षीय अनिल सेठिया,महासभा पर्यवेक्षक द्वय तथा गणमान्य सदस्यों ने महेंद्र मांडोत के प्रति पूर्ण सहयोग के आश्वाशन के साथ हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कीं। अंत में नव निर्वाचित अध्यक्ष महेंद्र मांडोत ने अपने वक्तव्य में सम्पूर्ण समाज के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सबके सहयोग से ,पूर्ण निष्ठा के साथ संघ व समाज हित में कार्य करने का वचन दिया। महासभा पर्यवेक्षक प्रकाश लोढा व संजय बांठिया भी विशेष रूप से उपस्थित थे। संगठन मंत्री चंद्रेश चिप्पड़ के धन्यवाद ज्ञापन के साथ अधिवेशन की कार्यवाही का समापन हुआ।

सिकंदराबाद

सिकंदराबाद में सभा अध्यक्ष सुशील संचेती की अध्यक्षता में आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण एवं सभा गीत से हुआ। आगामी वर्ष हेतु अंकेक्षक नियुक्ति तथा प्राप्त प्रस्तावों पर भी अपेक्षानुसार चिंतन एवं निर्णय लिया गया। अध्यक्षीय चुनाव/मनाव प्रक्रिया के अंतर्गत सत्र 2026-28 हेतु सुशील संचेती को पुनः अध्यक्ष पद के लिए मनोनीत किया गया। चुनाव अधिकारी बाबूलाल बैद एवं सह चुनाव अधिकारी लक्ष्मीपत बैद ने चुनाव प्रक्रिया को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने में सक्रिय भूमिका निभाई। नवमनोनीत अध्यक्ष ने अपनी टीम में पुनः मंत्री के रूप में हेमंत संचेती व कोषाध्यक्ष ने रूप में मुकेश चोरड़िया को पुनः नियुक्त किया।

उपस्थित सभी सम्मानित सदस्यगण ने इस नव मनोनीत टीम का स्वागत किया गया तथा सभी सदस्यों ने संगठन की एकता, सक्रियता एवं सेवा भावना को और सशक्त बनाने का संकल्प व्यक्त किया। अंत में आभार ज्ञापन मंत्री हेमंत संचेती ने किया।

भक्ति रस में सराबोर हुई 'महाश्रमणोस्तु मंगलम् – एक भक्ति संध्या'

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर के द्वारा युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 53वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में 'महाश्रमणोस्तु मंगलम् – एक भव्य भक्ति संध्या' का आयोजन टी.एम.ऑडिटोरियम में किया गया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही तथा पूरा वातावरण गुरु भक्ति और आध्यात्मिक उल्लास से सराबोर हो उठा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रिया पारख द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण गीत से हुआ। इसके पश्चात एकता पुगलिया ने आचार्य भिक्षु को समर्पित भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति देकर सभी को भाव-विभोर कर दिया। तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर की ओर से राजेंद्र बोथरा, संगीत बोथरा एवं टीम द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत कर गुरु भक्ति का संदेश दिया गया। तेयुप अध्यक्ष ललित राखेचा ने स्वागत उद्बोधन में सभी श्रद्धालुओं का अभिनंदन करते हुए कहा कि गुरु भक्ति का यह अवसर सभी के जीवन में आध्यात्मिक ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार करने वाला है। कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक रामलाल सूरज देवी रांका चैरिटेबल ट्रस्ट रहे। कार्यक्रम प्रभारी संगीत बोथरा ने जानकारी देते हुए बताया कि भक्ति संध्या के मुख्य गायक प्रसिद्ध कलाकार दर्शन चौपड़ा ने अपनी सुमधुर एवं प्रभावशाली प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने गुरुदेव की महिमा, त्याग, तप एवं आध्यात्मिक संदेशों से ओत-प्रोत भजनों की प्रस्तुति दी, जिस पर उपस्थित श्रद्धालु भक्ति भाव में झूम उठे। मंत्री मांगीलाल बोथरा ने बताया कि दर्शन चौपड़ा बॉलीवुड एवं नीता अंबानी कल्चरल सेंटर में भी अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं। कार्यक्रम के दौरान प्रायोजक परिवार एवं कलाकारों का सम्मान पताका, साहित्य एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर किया गया। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन उपाध्यक्ष देवेंद्र डागा ने किया।

अंत में मंत्री मांगीलाल बोथरा ने सभी अतिथियों, श्रद्धालुओं एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। परिषद ने कहा कि ऐसे आध्यात्मिक आयोजन समाज में संस्कार, सद्भावना एवं सकारात्मक ऊर्जा के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

ज्ञानी और अनुभवी...

सघन साधना शिविर की सराहना : पूज्य प्रवर ने चातुर्मास प्रवास स्थल पर चल रहे सघन साधना शिविर की सराहना करते हुए फरमाया कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वाधान में चल रहा यह उपक्रम बेहद निष्पत्ति पूर्ण है। यदि इन शिविरों के माध्यम से बालक-बालिकाओं के भीतर साधना के गहरे संस्कार पैदा होते हैं और कोई वैराग्य की ओर बढ़कर मुमुक्षु बनता है, तो यह शासन के लिए गौरव की बात है। योगक्षेम वर्ष में ऐसे अनेक शिविर लगाए जाने चाहिए। मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर ने उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुत की गई विविध तात्विक जिज्ञासाओं का अत्यंत सरल शब्दों में समाधान किया।

बड़ों को वंदन करने...

वंदना का विज्ञान और विनय परंपरा : शांतिदूत ने धर्मसंघ की शिष्ट परंपरा और वंदना से होने वाले कर्म निर्जरा के विज्ञान पर विशेष प्रकाश डालाः

१. पुण्य का बंध और निर्जरा : व्यवहार की भूमिका में बड़ों को वंदना करना एक अत्यंत शिष्ट परंपरा है। आध्यात्मिक दृष्टि से वंदना करने से जीव के नीच गोत्र का क्षय होता है और उच्च गोत्र का बंध होता है, जिससे आत्मिक निर्जरा और पुण्य का संचय होता है।

२. वंदना की स्थापित विधि : तेरापंथ धर्मसंघ में 'तिक्खुत्तो' के पाठ से और प्रतिक्रमण के दौरान 'इच्छामि खमासमणो' के द्वारा वंदन करने की वैज्ञानिक विधि निर्धारित है।

३. मर्यादा और प्रोटोकॉल : गुरुकुलवास में पक्खी के दिन अपने से बड़े साधु-साध्वियों को और बहिर्विहार के समय दो समय वंदना अवश्य करनी चाहिए। छोटे साधु-साध्वियों के मन में बड़ों के प्रति अगाध विनय और सम्मान होना चाहिए। आचार्य व युवाचार्य की वंदना के समय निर्धारित प्रोटोकॉल और नियमों का पूरी जागरूकता से ध्यान रखना चाहिए।

जिज्ञासा समाधान एवं सांस्कृतिक प्रस्तुति : मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर ने उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुत की गई गूढ़ तात्विक जिज्ञासाओं का समाधान किया। इसके साथ ही, चातुर्मास प्रवास स्थल पर उपस्थित साधना शिविर के शिविरार्थियों को भी अपने आराध्य के समक्ष शंकाएं रखने का अवसर मिला, जिनका पूज्य प्रवर ने अत्यंत सरल शब्दों में निवारण किया। श्रावक समाज की ओर से धीरज बैद ने सुमधुर गीत का संगान कर गुरु चरणों में अपनी कृतज्ञता व भाववंदना समर्पित की।

पृष्ठ 2 का शेष

आँखें बंद होते ही यहीं...

अभिव्यक्तियाँ, शिविरार्थी जिज्ञासा एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ : मंगल प्रवचन के उपरान्त सरदारशहर से संबंधित साध्वीवृंद और समणीवृंद ने संयुक्त रूप से गुरुदेव की अभिवंदना में सुमधुर गीत का संगान किया। शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने इस अवसर पर अपनी मर्मस्पर्शी भावाभिव्यक्ति दी, जबकि साध्वी देवार्यप्रभा जी व साध्वी मनोज्ञयशा जी ने संयुक्त प्रस्तुति दी।

आराध्य ने सघन साधना शिविर के शिविरार्थियों की विविध जिज्ञासाओं का अत्यंत सरल शब्दों में समाधान किया। श्रावक समाज की ओर से तेरापंथी सभा कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

इसके पश्चात वृहद कोलकाता एवं दक्षिणी बंगाल ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों और कन्या मंडल की प्रशिक्षिकाओं ने सुंदर गीत एवं आध्यात्मिक प्रस्तुतियां देकर गुरु चरणों में अपनी वंदना समर्पित की।

बोलती किताब

अंतिम मनोरथ : अनशन

संयम, समाधि और आत्मसमर्पण की आध्यात्मिक साधना

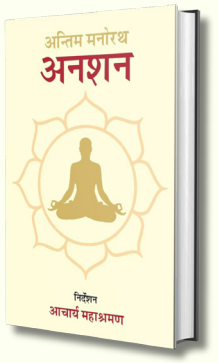

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रेरणादायी वाणी पर आधारित पुस्तक "अंतिम मनोरथ : अनशन" मानव जीवन के अंतिम चरण में संयम और आध्यात्मिक साधना के महत्व को स्पष्ट करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कृति है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक जैन परंपरा में वर्णित अनशन और संलेखना की साधना से जुड़े सिद्धांतों तथा आचरण को सरल और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत करती है। इसमें जीवन को संयमपूर्वक जीने के साथ-साथ संयमयुक्त मरण की आध्यात्मिक दृष्टि को समझाने का प्रयास किया गया है।

जैन दर्शन में अनशन को केवल उपवास या आहार-त्याग के रूप में नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और कर्मनिर्जरा की एक महत्त्वपूर्ण साधना माना गया है। यह साधना व्यक्ति को बाहरी आसक्तियों से ऊपर उठकर आत्मचिंतन, वैराग्य और समता की भावना विकसित करने की प्रेरणा देती है। जब साधक जीवन की अनित्यता को समझते हुए अपने भीतर आत्मबल और आध्यात्मिक जागरूकता का विकास करता है, तब वह राग-द्वेष से मुक्त होकर शांत और संतुलित भाव से जीवन को देखने की क्षमता प्राप्त करता है।

आध्यात्मिक साधना का यह मार्ग व्यक्ति को यह समझने की प्रेरणा देता है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल भौतिक सुखों की प्राप्ति नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और आंतरिक जागरण है। जब मनुष्य अपने भीतर की आसक्तियों, इच्छाओं और मोह को कम करने का प्रयास करता है, तब उसके जीवन में वैराग्य, धैर्य और आत्मसंयम का विकास होने लगता है। इन भावों के जागरण से व्यक्ति का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक और संतुलित बनता है। वह परिस्थितियों को शांत मन से स्वीकार करना सीखता है और जीवन की हर अवस्था को आध्यात्मिक दृष्टि से देखने की क्षमता विकसित करता है।

यह कृति पाठक को संयम, आत्मचिंतन और आध्यात्मिक जागरूकता की दिशा में आगे बढ़ने का प्रेरक संदेश देती है। इसकी सरल, सहज और प्रभावशाली भाषा पाठक के मन में गहरी छाप छोड़ती है। पुस्तक के माध्यम से यह भाव उभरकर सामने आता है कि यदि मनुष्य अपने जीवन में संयम, समता और आत्मानुशासन को स्थान दे, तो उसका जीवन अधिक सार्थक और शांतिपूर्ण बन सकता है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

नारी लोक नवीन कार्यालय का हुआ शुभारंभ

उदयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर ने प्रज्ञा शिखर महाप्रज्ञ विहार भुवाना में महिला मंडल के नवीन कार्यालय नारी लोक का जैन संस्कार विधि से शायर देवी द्वारा शुभारंभ करवाया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्कारक पंकज भंडारी द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। सभाध्यक्ष कमल नाहटा और तेयुप अध्यक्ष अशोक चोरड़िया ने महिला मंडल की पूरी टीम को इसके लिए बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित। महिला मंडल अध्यक्षा रेणुबाला कच्छारा द्वारा सभी का स्वागत किया गया। आभार मंत्री अनीता कोठारी ने किया। इस अवसर पर महासभा से महेंद्र सिंघवी, अभातेयुप से अभिषेक पोखरना, अजीत छाजेड, संदीप हिंगड़, तेयुप मंत्री विनीत फुलफगर, महिला मंडल पदाधिकारी सहित तेरापंथ समाज से कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 जून - 07 जून 2026

जब मौत से कोई मित्रता का अनुबंध नहीं, तो फिर धर्म को कल पर क्यों टालना? : आचार्यश्री महाश्रमण

एकादशमाधिशास्ता ने समझाया अर्हत् वंदना का मर्म; आलस्यवश अच्छे कार्यों को भविष्य पर न छोड़ने की दी पावन सीख

लाडनूं।
21 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'कल की इच्छा कौन करे?' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से गंभीर अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने काल द्रव्य की अनंतता और जीवन की क्षणभंगुरता को रेखांकित करते हुए संपूर्ण चतुर्विध धर्मसंघ को आलस्य का त्याग कर तत्परता से धर्म संचय करने का पावन पाथेय दिया।

काल की अनंतता और कल का भ्रमः आचार्य प्रवर ने काल चक्र के स्वरूप और मानवीय भूलों को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किएः

१. स्वल्प वर्तमान : अनंत काल अतीत की सीमा में बीत चुका है और अनंत काल ही भविष्य (अनागत) की गोद में है। हमारे पास जो वर्तमान है, वह बहुत छोटा (स्वल्प) है।

२. कल पर कार्य कौन छोड़े?: आगमकार के अनुसार केवल तीन ही व्यक्ति किसी धार्मिक या आवश्यक कार्य को कल पर टाल सकते हैं—१. जिसकी मृत्यु से गहरी दोस्ती हो, २. जो मृत्यु से भी तेज़ दौड़कर बच सकता हो, और ३. जो स्वयं अमर हो। चूंकि धरती पर ऐसा कोई मनुष्य नहीं है, इसलिए अच्छे कार्यों को कल पर छोड़ना भारी भूल है।

आत्मा ही सबसे बड़ा मित्र : पूज्य गुरुदेव ने सूक्त 'अप्पा मित्त ममितं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठियो' की व्याख्या करते हुए आत्मा और सांसारिक व्यवहार के व्यावहारिक सूत्र दिएः

१. आंतरिक मित्रता : मनुष्य दुनिया में मित्र ढूंढता है, लेकिन जो आत्मा सद्प्रवृत्तियों में लगी है, वही उसकी सबसे बड़ी मित्र और कल्याणकारी है।

२. अर्हत् वंदना से निर्जरा : पूर्व रात्रि और पश्चिम रात्रि दोनों समय होने वाली अर्हत् वंदना का संगान जीवन में कर्मों की निर्जरा का एक सशक्त साधन बनता है।

३. परिस्थितियों से सामंजस्य :

> कठिनाई, बुढ़ापा और रोग से मित्रता कर मनोबल को हमेशा रखें उच्च
> -आचार्यश्री महाश्रमण

स्थूल व्यवहार में यदि जीवन में कोई गंभीर कठिनाई, रोग या बुढ़ापा आ जाए, तो मनुष्य को उनके साथ भी मानसिक रूप से मित्रता कर लेनी चाहिए ताकि उसका आत्मिक मनोबल हमेशा उच्च बना रहे।

ज्ञान दान और समय प्रबंधन का महत्व : शांतिदूत ने जीवन को सफल बनाने के लिए दान और तत्परता की महत्ता पर विशेष प्रकाश डालाः

१. ज्ञान की अनूठी विशेषता : समाज में भौतिक वस्तुओं का दान तो श्रेष्ठ है ही, परंतु विद्या (ज्ञान) का दान भी उतना ही अनूठा है। विद्या का ज्ञान जितना दूसरों को बांटा जाता है, स्वयं के ज्ञान में उतनी ही वृद्धि होती है।

२. सजगतापूर्वक कार्य : यदि समय प्रबंधन या किसी विशेष मजबूरी के कारण कोई कार्य कल के लिए निर्धारित हो, तो बात अलग है, अन्यथा आलस्य के कारण किसी भी शुभ कार्य को कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

संस्कार निर्माण शिविर के बच्चों को मिला पाथेयः आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान संस्कार निर्माण शिविर के अनेक संभागी शिविरार्थी बालक-बालिकाएं गुरुदेव की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। शिविरार्थी सारंग बोथरा, लक्षिता बोथरा और दिवांश सेठिया ने जहाँ शिविर के अपने सुंदर अनुभवों की अभिव्यक्ति दी, वहीं राजेश बाफना ने भी अपने विचार रखे। शिविर के बच्चों ने सुमधुर गीतों का संगान कर आराध्य के चरणों में वंदना की। इस अवसर पर मुख्य मुनि श्री ने सभी संभागियों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और आचार्य श्री ने बच्चों को अच्छे संस्कारों के विकास का पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

बीती हुई रात कभी लौटकर नहीं आती, हर पल को धर्म की पूंजी बनाएं : आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन को सार्थक करने के लिए नवकारसी, जप और दैनिक सामायिक का दिया पावन सूत्र

लाडनूं।
20 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज सुधर्मा सभा में 'जिन्दगी सफल बनाएं हम' विषय पर अत्यंत व्यावहारिक व प्रेरणादायी देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने समय के बीतने के स्वभाव और जीवन की क्षणभंगुरता को रेखांकित करते हुए मनुष्य को धर्म संचय के प्रति निरंतर जागरूक रहने का पावन पाथेय दिया।

समय का स्वभाव और रात की अफलता : आचार्य प्रवर ने काल चक्र की गति को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किएः

१. समय की अपरिवर्तनीयताः समय का मूल स्वभाव केवल बीतना (वर्तना) है। जो-जो रात्रि बीत जाती है, वह कभी लौटकर नहीं आती। चाहे कोई पापकर्म कर रहा हो या धर्मकार्य, बीते समय की पुनरावृत्ति असंभव है।

२. सफल बनाम अफल रात्रि : जो मनुष्य अपने अमूल्य समय को अधर्म, प्रमाद और सांसारिक प्रपंचों में नष्ट कर देता है, उसकी रात्रियां 'अफल' (व्यर्थ) चली जाती हैं। इसके विपरीत, जो हर क्षण का उपयोग आत्म-कल्याण में करता है, उसकी रात्रियां 'सफल' हो जाती हैं।

गृहस्थों के लिए धर्म संचय के व्यावहारिक सूत्र : शांतिदूत ने कर्मवाद और पुनर्जन्म को मानने वाले श्रावकों को चेताते हुए फरमाया कि वर्तमान में जो अनुकूलता, धन-संपत्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त है, वह पूर्वार्जित पुण्य का उदय है। चूंकि मानव शरीर अध्रुव है और मृत्यु निरंतर निकट आ रही है, इसलिए गृहस्थों

को प्रतिदिन इन नियमों का पालन करना चाहिए।

१. त्याग और तप : आत्म-शुद्धि के लिए प्रतिदिन नवकारसी और पौरसी का प्रत्याख्यान (त्याग) अवश्य करना चाहिए।

२. दैनिक स्वाध्याय व जप : रोज नवकार महामंत्र की माला का जप करने और कम से कम एक सामायिक करने का संकल्प लें, जिससे आध्यात्मिक ऊर्जा का संचय हो सके।

चारित्रात्माओं को साधना की गहराई का निर्देश : एकादशमाधिशास्ता ने संतों, साध्वियों और समणियों के लिए दैनिक चर्या की शुद्धि पर विशेष बल दिया।

१. गाथाओं का चितारनाः रात्रि के समय सजगतापूर्वक दो-सौ या तीन-सौ गाथाओं का चितारना (स्मरण) निरंतर गतिमान रहना चाहिए।

२. भावपूर्वक क्रियाएं : रात्रि के समय केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि जप, ध्यान, दैनिक प्रतिक्रमण, अर्हत् वंदना और आलोयणा को अत्यंत भावपूर्वक संपन्न करना चाहिए।

जिज्ञासा समाधान एवं वंदना : मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर ने उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुत की गई विविध तात्विक जिज्ञासाओं का अत्यंत सरल शब्दों में समाधान किया।

आचार्यश्री की अभ्यर्थना और अभिवंदना के क्रम में मुनि प्रीतकुमार जी ने विषय के संदर्भ में अपने सुंदर प्रेरक विचार प्रस्तुत किए।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

केवल आत्मा के लिए समर्पित

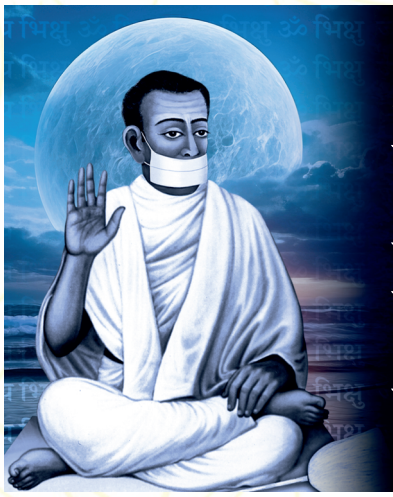

आचार्य भिक्षु अध्यात्म की गहराई तक पहुंचे हुए संत थे। उनका ध्यान केवल आत्मा पर टिका हुआ था। जो आत्म-द्रष्टा होता है, उसमें ममत्व नहीं होता। जिसमें ममत्व होता है, वह आत्म-द्रष्टा नहीं हो सकता। आचार्य भिक्षु ने स्वयं ममत्व का विसर्जन किया और अपने शिष्यों को भी ममत्व विसर्जन की प्रेरणा देते रहे।

1. एक दिन मुनि खेतसीजी को अतिसार हो गया। आचार्य भिक्षु उनकी परिचर्या में बैठे थे। खेतसीजी कुछ स्वस्थ हुए उन्होंने स्वामीजी से कहा– सती रूपांजी का विशेष ध्यान रखना है। आपने कहा– बहन की चिंता मत करो। तुम अपना मन समाधि में रखो।

2. आचार्य भिक्षु ने अंतिम समय में ऋषि रायचन्दजी से कहा– तुम बुद्धिमान् बालक हो। मेरे लिए मोह मत करना। निर्मल ध्यान का प्रयोग करते रहना।

ऋषिराय बोले– आप उच्च गति में जा रहे हैं, समाधिमरण कर रहे हैं, फिर मैं मोह क्यों करूंगा?

साप्ताहिक प्रेरणा

5 सामायिक संकल्प करें।

क्या आप जानते हैं?

मौसम्बी, संतरा, माल्टा और किन्नु का मोटा छिलका व बीज अलग हो जाने के बाद उनके अवशेष भाग को अचित्त माना जाए। उनके पतले छिलके को सचित्त नहीं माना जाए।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

चलो, झंझट मिटा

किसी के बीमारी होती है, तब वह हाय! त्राहि करने लग जाता है। तब स्वामीजी बोले– 'ऐसा नहीं करना चाहिए। बीमारी होने पर दृढ़ रहना चाहिए।'

जैसे किसी के सिर पर ऋण था। वह ऋण चुकाना नहीं चाहता था, किंतु ऋणदाता ने शक्ति-प्रयोग से अपने पूंजी वापस ले ली। तब मूर्ख आदमी तो विलाप करता है और समझदार होता है, वह सोचता है– 'चलो, मेरा ऋण चुका। बाद में ही देना पड़ता तो पहले ही झंझट मिटा, सिर का ऋण उतर गया।' इसी प्रकार बीमारी होने पर जो सयाना होता है, वह सोचता है– 'बंधे हुए कर्म भोग लिए, चलो झंझट समाप्त हुआ।' यह सोच वह विलाप नहीं करता।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोएसव्वसाहुणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

नमस्कार महामंत्र महान् क्यों?

यह एक स्वाभाविक प्रश्न होता है कि नमस्कार मंत्र को 'महामंत्र' क्यों कहते हैं? ऐसी क्या विशेषताएं हैं, जिसके कारण इतनी बड़ी उपमा दी गई। हमारे आचार्य इसका बहुत सुंदर समाधान करते हैं। सबसे पहली विशेषता यह है कि इसमें किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। दूसरी बात यह आत्मा की क्रमिक विशुद्धि की भूमिका है– साधु से सिद्ध बनता है। इसमें सिर्फ स्तुति नहीं है, इसमें नमस्कार, विनय, श्रद्धा, समर्पण व अपनी आत्मिक उन्नति है। प्रत्येक पद अपनी स्वतंत्र खुबियां रखता है। जो हमारे जीवन की समग्रता के लिए चामत्कारिक रूप से कार्य करता है। जैसे– णमो अरहंताणं– अर्हत्ता का वाचक। हमारे जीवन में अर्हता, योग्यता का विकास करता है। णमो सिद्धाणं– सिद्धत्व का वाचक, हमारी सभी प्रकार की सिद्धियों के लिए उपयोगी है। णमो आयरियाणं– आचार का प्रतीक, हमारे जीवन में आचार, आचरण, व्यवहार को उत्कृष्ट बनाता है। णमो उवज्झायाणं– उपाध्याय का वाचक अर्थात् ज्ञान की निर्मलता के सहयोगी। णमो लोए सव्व साहूणं– साधुता का प्रतीक, साधना, कर्तव्य का वाचक, प्रेरक। इन्हीं गुणों से यह मंत्र महामंत्र बनता है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
01 जून - 07 जून 2026

संसार के मोह-जाल को वही काट सकता है जिसकी तपस्या उदार और मन धीर हो : आचार्यश्री महाश्रमण

शांतिदूत ने समझाया 'भिक्षु चर्या' का व्यापक अर्थ; मोह-माया के जर्जर जाल को काटकर समचित्त रहने का दिया संदेश

लाडनूं।
22 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'धीर पुरूष का सामर्थ्य' विषय की तात्विक विवेचना करते हुए गंभीर अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने जीव की अनंतकालीन यात्रा में साधुत्व के कदम को सबसे बड़ा बताते हुए संपूर्ण चारित्रात्माओं को हर परिस्थिति में समचित्त रहने और धीरता धारण करने का पावन पाथेय दिया।

साधुत्व का भार और रोहित मत्स्य का दृष्टांत : आचार्य प्रवर ने आगम गाथाओं के आलोक में संन्यास जीवन की कसौटियों को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. ऐतिहासिक कदम : अनंत काल की आत्मिक यात्रा में साधुत्व को ग्रहण करना जीव का सबसे बड़ा कदम है। इस भार को वही वहन कर सकता है जो स्वभाव से धीर हो और जिसकी तपस्या उदार हो।

२. जर्जर जाल का उदाहरण : जिस प्रकार शक्तिशाली 'रोहित मछली' धागों से बुने जर्जरीभूत जाल को भी अपनी ताकत से छेदकर बाहर निकल जाती है, ठीक उसी प्रकार धीर पुरुष संसार के मोह-माया और काम-भोगों के जाल को काटकर भिक्षा चर्या के पथ पर आगे बढ़ जाते हैं।

३. अधीरता का संकट : साधुत्व लेने के बाद भी यदि जीवन में अधीरता (लापरवाही या आवेश) आ जाए, तो साधक पग-पग पर संकल्प-विकल्पों से घिर जाता है। ऐसा अधीर व्यक्ति आवेश में आकर कभी भी साधुपन छोड़ने जैसा आत्मघाती निर्णय ले सकता है, इसलिए संन्यास में धैर्य ही रीढ़ है।

समचित्त रहने और सेवा के विविध आयाम : शांतिदूत ने साधु चर्या के व्यावहारिक पक्षों और सेवा के विविध रूपों पर विशेष प्रकाश डाला।

१. उलाहने में भी धीरता : जीवन पथ पर कभी अपनी गलती होने पर, या बिना किसी गलती के भी यदि दूसरों से उलाहना सुनना पड़ जाए, तो भी साधक को अधीर होने के बजाय समचित्त रहना चाहिए।

२. प्रवृत्तियों पर लगाम : मन, वचन और काया जैसे ही दुष्प्रवृत्तियों की ओर बढ़ने लगें, जागरूक साधक को तुरंत उनकी लगाम खींच लेनी चाहिए और प्रमाद से बचना चाहिए।

३. परोपकार के मार्ग : पांच महाव्रतों का पालन और पाद विहार करना अपने आप में विशिष्ट तपस्या है। इसके साथ ही क्षेत्रों में विहरण कर प्रवचनों से ज्ञान देना, अध्यापन कराना, साहित्य संबंधी कार्य करना और भाई-बहनों को 'मुमुक्षु' बनने की प्रेरणा देना भी सेवा के ही उत्तम रूप हैं।

> बिना गलती के भी उलाहना सुनना पड़े, तब भी मन को समचित्त रखना ही असली धीरता है
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

सघन साधना शिविर व ज्ञानशाला को आशीष : मंगल प्रवचन के उपरान्त पूज्य गुरुदेव ने चातुर्मास प्रवास स्थल पर आयोजित सघन साधना शिविर के शिविरार्थियों को धर्म रूपी स्कूल में गहराई से ज्ञान ग्रहण करने की मंगल प्रेरणा व आशीर्वाद प्रदान किया। इसके पश्चात आराध्य ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम के अंत में कोलकाता ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी सुंदर आध्यात्मिक प्रस्तुतियां देकर गुरुदेव के चरणों में भाववंदना की।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।